डाक पंजीयन क्र. : म.प्र./भोपाल/367/2024-26
आर.एन.आई. क्र. : 56428
टाइटिल कोड : MPHIN 09566
प्रेषण : प्रतिमाह दिनांक 7-8
वर्ष 37 अंक 03
(मानस समाचार/मानस भारती सहित)

प्रकाशन दिनांक 05 दिसम्बर 2025
वर्ष 52 अंक 12
अगहन-पौष मास 2082
पृष्ठ संख्या 36
मूल्य 20/-

तुलसी मानस भारती

तुलसी मानस प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश की अध्यात्म, संस्कृति और संस्कार पत्रिका

अवधपुरी प्रभु आवत जानी।
भई सकल सोभा के खानी।।

तुलसी मानस प्रतिष्ठान की प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति की बैठक दिनांक 7 नवंबर 2025

तुलसी मानस प्रतिष्ठान की प्रबंध कार्यकारिणी समिति की बैठक में उपस्थित
कार्याध्यक्ष श्री रघुनंदन शर्मा, संयोजक श्री राजेन्द्र शर्मा, सचिव श्री कैलाश जोशी, कोषाध्यक्ष श्री विजय अग्रवाल
सहित समस्त सम्मानीय पदाधिकारी एवं सदस्यगण

पंचायत एवं समाज सेवा संचालनालय मध्यप्रदेश द्वारा समस्त पंचायतों एवं प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के लिए, शिक्षा विभाग द्वारा समस्त महाविद्यालयों, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों/हाई स्कूलों, शिक्षा महाविद्यालयों, बुनियादी प्रशिक्षण संस्थाओं, राज्य स्तरीय संस्थाओं तथा केन्द्रीय एवं जिला पुस्तकालयों के लिए, स्थानीय शासन विभाग द्वारा नगर निगमों एवं नगर पालिकाओं के लिए तथा आदिमजाति कल्याण विभाग द्वारा आदिवासी शालाओं के लिए स्वीकृत। उ.प्र. शासन द्वारा जिला पुस्तकालयों एवं वाचनालयों के लिए अनुमोदित।

तुलसी मानस प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश की मासिक मुखपत्रिका

तुलसी मानस भारती

संस्थापक

पं. गोरेलाल शुक्ल

http://webmail.manasbhawanbhopal.com/

संपादक मंडल

रघुनंदन शर्मा

प्रकाशक

कार्याध्यक्ष, तुलसी मानस प्रतिष्ठान, भोपाल

raghunandanbjp@gmail.com

प्रभुदयाल मिश्र

प्रधान संपादक

तुलसी मानस भारती

prabhu.d.mishra@gmail.com

राजेन्द्र शर्मा

संयोजक, तुलसी मानस प्रतिष्ठान, भोपाल

sharmarajendra8june@gmail.com

कैलाश जोशी

सचिव,तुलसी मानस प्रतिष्ठान, भोपाल

kailashjoshi58@gmail.com

देवेन्द्र कुमार रावत

संपादक

सहसचिव, तुलसी मानस प्रतिष्ठान, भोपाल

dkmrawat@gmail.com

परामर्श

विजयदत्त श्रीधर, रमेश शर्मा, माधव सिंह दांगी

ग्राहक शुल्क : वार्षिक रु. 250.00, पंचवर्षीय रु.1100.00, आजीवन रु. 2500.00 इस अंक का रु.20.00

विदेश में : फिजी आयरलैण्ड, मॉरीशस व अन्यत्र समुद्री डाक से (भारतीय रुपये में) वार्षिक रु. 1250.00, पंचवर्षीय रु. 5000.00 आजीवन रु. 12500.00, हवाई डाक से वार्षिक रु. 1500.00 पंचवर्षीय रु. 6000.00 आजीवन रु. 15000.00

पंजाब नेशनल बैंक खाता क्र. 1276000100137956 आईएफसी कोड PUNBO127600

सम्पर्क : तुलसी मानस प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश, मानस भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल–462002, दूरभाष : 0755–2661196, 2660010

tulsimanasbharati@gmail.com *www.manasbhawanbhopal.com*

अनुक्रमणिका

निर्वचन

अद्वैत और प्रत्यभिज्ञा दर्शन का 'अभिनव' शैव संगम	प्रभुदयाल मिश्र	03

आलेख

रामचरन रति निपुन बिबेका	देवेन्द्र कुमार रावत	05

कविता

महाकवि तुलसीदास जी का पावन स्मरण	डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त	08

आलेख

तात कृपा कर कीजिए सोई।	उमेश पाठक	09
मानस में ज्योतिष	कैलाश चंद्र शर्मा	15

मध्यप्रदेश प्रशस्ति

प्यारा मध्यप्रदेश	राजेन्द्र शर्मा 'अक्षर'	19

आलेख

हनुमान जी के पाँच 'प' का स्पष्टीकरण	प्रहलाद गुप्ता	20
गो. तुलसीदास का दार्शनिक अभिमत	चंदन सिंह ठाकुर	22
राम नाम चिंतामनि सुंदर	डॉ. सुनील कुमार सारस्वत	26
अहल्या उद्धार	संदीप कुमार परिहार	31

पुस्तक समीक्षा

श्रीराम कथा	एस.एम. गोयल	35

प्रतिष्ठान समाचार 36

निर्वचन

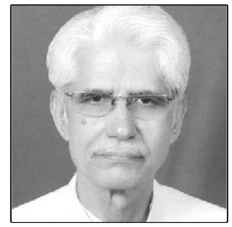

अद्वैत और प्रत्यभिज्ञा दर्शन का 'अभिनव' शैव-संगम

श्रुति के स्मृति संप्रस्थान में पंच देव – गणेश, सूर्य, शिव, पार्वती और विष्णु भारतीय उपासना के आधारभूत देवता हैं जो लोक और परलोक की सिद्धि में सहायक हैं। इस लोक मूलक उपासना के समानांतर उपनिषदों से आरंभ तत्त्व ज्ञानी आचार्य वर्ग की सृष्टि और स्रष्टा के गहन और सूक्ष्मतर स्तरों की पड़ताल इसे सुगम बनाती है। भगवान वादरायण,गौड़पाद, गोविंदपाद आदि की इस उर्वर भूमिका में आचार्य शंकर ने ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता और ईशादि प्रमुख एकादश उपनिषदों के भाष्य द्वारा योग, सांख्य, पूर्व मीमांसा, न्याय और वैशेषिक के परे वेदांत की परमोत्कृष्टता में प्रतिष्ठित किया।

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या निरालम्बोपनिषद् (श्लोक 35) पर आधारित आदिशंकर के 'ब्रह्मज्ञानवलीमाला' के निम्न श्लोक को प्रायः उनके ही उद्घोष के रूप में सर्वत्र प्रचारित किया जाता है –

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः।
अनेन वेद्यं सच्छास्त्रमिति वेदान्तडिण्डिमः।।

भारतीय ज्ञान धारणा की इस 'व्यतिरेक' अनुसंधान प्रक्रिया में छान्दोग्य उपनिषद की इस 'अन्वय' उद्घोषणा को विस्मृत नहीं किया जा सकता–'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' (छान्दोग्य उपनिषद् 3–14–1) जो प्रायः एक दूसरे की पूरक ही हैं । भगवान् वेदव्यास ने श्रीमद्भागवत के प्रथम श्लोक के प्रथम पद में "परम सत्य" के अन्वीक्षण में इसीलिए कहा है–

यतोन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्।

अर्थात् जो अन्वय के इतर 'व्यतिरेक' आदि प्रक्रिया से यथा प्रकट स्वप्रकाश में परिपूर्ण परमब्रह्म है।

आदिशंकर की स्मार्त पंचदेवोपासना में समयाचार शैव पक्ष प्रत्यभिज्ञा दर्शन के सर्वदा सन्निकट है। अपने प्रसिद्ध दक्षिणामूर्ति स्तोत्र में वे गुरु द्वारा शिष्य को परम शिवत्व के प्रत्यभिज्ञान की क्षमता प्रदान कराते हुए कहते हैं –

राहुग्रस्तदिवाकरेन्दुसदृशो मायासमाच्छादनात्।
सन्मात्रः करणोपसंहरणतो योऽभूत्सुषुप्तः पुमान्।।
प्रागस्वाप्समिति प्रबोधसमये यः प्रत्यभिज्ञायते।
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।।

अर्थात् जो (परमात्मा) माया के आवरण से ढंका होने के कारण राहु ग्रस्त सूर्य और चन्द्रमा के समान (आवृत्त) हो जाता है और इन्द्रियों तथा वृत्तियों के लीन हो जाने से सुषुप्ति (गहरी नींद) में केवल 'सन्मात्र' (सत्रूप) पुरुष बनकर रहता है, और जो जागने के समय 'मैं सोया था' इस प्रकार 'प्रत्यभिज्ञायते' (पहचाना जाता है), उन श्रीगुरु मूर्ति दक्षिणामूर्ति को यह मेरा नमस्कार है।

कश्मीरी शैव दर्शन के ही अनुरूप वे शिव और शक्ति की परमेश्वरता में अपनी सौन्दर्यलहरी में तंत्र और सौन्दर्य की अभिव्यंजना का अद्‌भुद रसायन इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं –

गतास्ते मञ्चत्वं दुहिणहरिरुद्रेश्वरभृतः
शिवःस्वच्छच्छायाघटितकपटप्रच्छदपटः ।
त्वदीयानांभासां प्रतिफलनरागारुणतया
शरीरी श्रृंगारो रस इव दृशां दोग्धि कुतुकम्।।
है मंच तुम्हारा ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर
निर्मल-आभा शंकर हैं इसके माया-पट
तेरी अरुणिम-द्युति से प्रतिबिम्बित होकर
दृग मूतिमंत रसपति का कौतुक करते।
(काव्यानुवाद)

अनंतर अभिनवगुप्त का अभिदान भारतीय चिंतनधारा का वह सेतु हैं जो तंत्र और वेदांत, सौंदर्य और साधना, तर्क और अनुभूति को जोड़ता है। वे उस परंपरा के प्रतिनिधि हैं जिसमें ज्ञान केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि आत्मानुभूति है।

काव्यशास्त्र को हुए अभिनवगुप्त के अवदान के संदर्भ में भी यहाँ यह कथन योग्य कि उन्होंने अपने लगभग एक सदी पूर्व के काव्य शास्त्र के आचार्य आनंदवर्धन के ध्वन्यालोक पर ध्वन्यालोचन टीका में आनन्दवर्धन के सिद्धांतों की व्याख्या और विस्तार का कार्य किया। अभिनवगुप्त ने ध्वनि सिद्धांत को रसानुभूति से जोड़ा जिसके अनुसार काव्य का चरम लक्ष्य रसास्वादन है। उन्होंने ध्वनि के 44 भेदों की भी चर्चा की, जो आनन्दवर्धन की अपेक्षा अधिक विश्लेषणात्मक है। इस प्रकार ध्वन्यालोक पर अभिनवगुप्त की लोचन–टीका न केवल आनन्दवर्धन के अभिव्यंजनावाद को दार्शनिक गहराई प्रदान करती है, अपितु रस– सिद्धान्त को प्रत्यभिज्ञा के आलोक में प्रतिष्ठित करती है। यह टीका काव्य के रहस्य को केवल व्याख्यायित ही नहीं करती, अपितु साधक को रसास्वादन के माध्यम से आत्मानुभूति की ओर उन्मुख करती है।

भारतीय सनातन प्रज्ञा के प्रतिनिधि आचार्य महामाहेश्वर अभिनव गुप्त, के ध्वन्यालोचन को विगत वर्ष ही विश्व धरोहर में स्थान प्रदान किया गया है। यह भारत की उद्‌भट ज्ञान परंपरा की सार्वलौकिक स्वीकृति का ही प्रमाण है ।

प्रभुदयाल मिश्र
प्रधान संपादक
8839319901

तुलसी मानस भारती का वर्ष 53 वें का प्रवेश-विशेषांक

हमारा जनवरी 2026 का आगामी विशेषाक गोस्वामी तुलसीदास के प्रामाणिक जीवन वृत्त के शोध को समर्पित है। पत्रिका के इस प्रयोजन में तत्कालीन ओरछा राज्य के अंतिम महाराज श्रीमन् वीरेंद्रसिंह जूदेव के 'विश्वकवि तुलसीदास' अनुष्ठान के पोषक पंडित लोकनाथ द्विवेदी 'सिलहकारी' की वर्ष 1945 में सम्पन्न शोध सामग्री की वह दुर्लभ पांडुलिपि है जिसके एक अंश पर हमारा यह विशेषांक केंद्रित है। हम आशा करते हैं कि साहित्य, संस्कृति और सनातन भारतीय चेतना के तेजपुंज महाकवि तुलसीदास के अवतरण के इस चिर प्रतीक्षित शोध पूर्ण चरित्र–चित्रण से सुधी पाठक वर्ग को अभीप्सित प्रसन्नता होगी । (प्र. सं.)

आलेख

रामचरन रति निपुन बिबेका

देवेन्द्र कुमार रावत

श्री रामचरितमानस में जहां ऋषि मुनियों के ज्ञान भक्ति और वैराग्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई है वहीं त्रिजटा जी के बारे में वर्णन आया है कि उनकी श्री राम जी के चरणों में अनन्य प्रीति थी। यद्यपि उन्हें राक्षसी भी कहा गया है पर वे विवेक निपुण थी इस प्रसंग में राक्षस राज रावण की देह नगरी में निवास करने वाली त्रिजटा जी के बारे में मानस रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास जी ने **रामचरन रति निपुण बिबेका** लिख कर मानस में स्त्री विमर्श का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है जिससे स्पष्ट होता है कि वे भक्ति स्वरूपा स्त्री पात्रों के चरित्र चित्रण में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करते हैं यदि इस संदर्भ में त्रिजटा जी को भी शतरूपा जी के समान विवेकी कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। वर्णन आता है कि, शतरूपा जी को तो स्वयं भगवान श्री राम ने कहा था –

मातु बिबेक अलौकिक तोरें ।
कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरें।।

अर्थात् हे माता! मेरी कृपा से तुम्हारा अलौकिक ज्ञान कभी नष्ट नहीं होगा तो जो विवेक शतरूपा जी को भगवान की कृपा से मिला वही विवेक की धनी त्रिजटा जी भी हैं। यहां त्रिजटा जी की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने न केवल अपने स्वप्न के माध्यम से श्री राम भक्त हनुमान जी को प्रेरणा दी कि उन्हें अब लंका में आकर आगे क्या करना है, तो दूसरे त्रिजटा जी ने सीता जी को अन्य राक्षसियों के त्रास से भी बचा लिया। जहाँ पहले से ही हनुमान जी मसक समान रूप धरकर वृक्ष पर बैठे हुए, यह सब देख भी रहे थे। वर्णन आया है –

करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ।
बन असोक सीता रह जहवाँ।।

अर्थात श्री हनुमान जी वहां गए जहां सीता जी अशोक वन में शोक ग्रस्त बैठी

हुई थी तब श्री हनुमान ने वहां जाकर वृक्ष के पत्तों में छुप गए और यह विचार ही कर रहे थे कि वह कैसे सीता जी से मिले इसी समय रावण आ गया और सीता जी को साम, दाम, भय और भेद दिखाकर डराने लगा आखिर में जब रावण सब प्रयास कर हार गया और एक माह की अवधि की सीमा में उन्हें उसकी बात न मानने पर मृत्युदण्ड देने का भय दिखाकर अपने भवन चला गया। रावण के जाने के बाद राक्षसियों के समूह क्रूर से क्रूरतम रूप धरकर सीता जी को भयभीत करने लगी। तब त्रिजटा जी ने अपना स्वप्न उन्हें बताया। वर्णन आता है :–

त्रिजटा नाम राच्छसी एका।
राम चरन रति निपुन बिबेका।।
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना।
सीतहि सेइ करहु हित अपना।।
सपनें बानर लंका जारी।
जातुधान सेना सब मारी।।
खर आरूढ़ नगन दससीसा।
मुंडित सिर खंडित भुज बीसा।।
एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई।
लंका मनहुँ बिभीषन पाई।।
नगर फिरी रघुबीर दोहाई।
तब प्रभु सीता बोलि पठाई।।
तासु बचन सुनि ते सब डरीं।
जनकसुता के चरनन्हि परीं।।
जहँ तहँ गईं सकल तब सीता कर मन सोच।
मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच।।

अर्थात् त्रिजटा जी ने सभी को बुलाकर अपना सपना सुनाया और कहा कि सीता जी की सेवा करके अपना कल्याण कर लो क्योंकि उन्होंने स्वप्न में देखा है कि एक बंदर ने लंका जला दी है राक्षसों की सेना मार डाली और रावण को नंगा कर गधे पर सवार कर घुमाया जा रहा है। उसके सिर मुँडे हुये हैं, भुजाएं कटी हुई हैं, वह दक्षिण दिशा को जा रहा है मानो लंका विभीषण ने पाई है नगर में श्री रघुवर की दुहाई फिर गई है। सीता जी को प्रभु ने अपने पास बुला लिया है। यह स्वप्न चार दिनों बाद सत्य होकर रहेगा। यहां त्रिजटा जी ने सभी राक्षसिनियों को जो स्वप्न सुनाया और सभी से कहा कि साक्षात् भक्ति स्वरूप सीता जी की शरण में रहो अन्यथा भगवान श्री राम की क्रोधाग्नि में सब कुछ जलने वाला है। त्रिजटा जी ने यह कहकर राक्षसनियों को इतना भयभीत कर दिया कि वह जानकी जी के चरणों में गिर पड़ी तब इसके बाद वे सब जहां–तहां चली गईं। सीता जी मन में सोचने लगीं कि एक महीना बीत जाने पर नीच राक्षस रावण मुझे मार डालेगा तब सीता जी को सांत्वना देती हुई त्रिजटा जी का प्रभु श्री राम के सुयश, प्रताप और बल के प्रति दृढ़ विश्वास इस रूप में व्यक्त हुआ है। वर्णन आता है –

सुनत बचन पद गहि समुझाएसि।
प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि।।

इससे स्पष्ट होता है कि त्रिजटा जी ने अपने विवेक से प्रभु अवतार के रहस्य को जान लिया था। वह विवेक जो विधाता की कृपा से प्राप्त होता है तब ही दोषों को छोड़कर मन गुणों में अनुरक्त होता है। त्रिजटा जी ऐसी ही राम भक्त हैं जिन्होंने राक्षसों के बीच रहते हुये भी सत्संग से प्राप्त विवेक का जीवन में सदुपयोग किया। इससे स्पष्ट होता है कि त्रिजटा जी ने इस संवाद के माध्यम से श्री हनुमान जी को भी एक तरह से संकेत दिया कि आप भले ही पत्तों में छिप कर बैठे हुए हों पर मैं जानती हूँ कि आप खल बन पावक ग्यान घन हो, खलों के वनों के लिए अग्नि रूप

हो, आप प्रभु श्री राम की इच्छानुसार लंका जलाने आए हो। यहाँ तो रावण श्री राम के भक्तों को बहुत त्रास दे रहा है। त्रिजटा जी इस संदर्भ में भगवान के स्वभाव और प्रभाव जो तीनों लोकों में प्रसिद्ध है उसे भी भली–भांति जानती हैं, क्योंकि प्रभु का यह स्वभाव तो **"लोकहूँ, वेद विदित इतिहासा, यह महिमा जानहिं दुर्वासा"** अर्थात् लोक और वेद दोनों में यह इतिहास कथा प्रसिद्ध है। इस महिमा को दुर्वासा ऋषि अच्छी तरह से जानते हैं कि भगवान ने भक्त राजा अंबरीष की दुर्वासा ऋषि से किस प्रकार रक्षा की थी। सत्संग प्रेमी त्रिजटा जी ने देवगुरु बृहस्पति और देवराज इंद्र संवाद के अंतर्गत यह कथा भी अवश्य सुनी होगी वर्णन आता है

तब किछु कीन्ह राम रुख जानी।
अब कुचालि करि होइहि हानी।।

अर्थात् देव गुरु बृहस्पति ने कहा कि हे देवराज पिछली बार रामचंद्र जी का रुख जानकर जो हमने उन्हें 14 वर्ष का वनवास दिला दिया था परंतु इस समय कुचाल करने से हानि ही होगी। हे देवराज! श्री रघुनाथ जी का स्वभाव सुनो वे अपने प्रति किए गए अपराध से कभी रुष्ट नहीं होते हैं

सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ।
निज अपराध रिसाहिं न काऊ।।
जो अपराधु भगत कर करई ।
राम रोष पावक सो जरई।।

अर्थात् जो भी व्यक्ति भगवान के भक्तों के साथ अपराध करता है उसे श्री राम की क्रोधाग्नि में जलना ही पड़ता है, हे हनुमान जी फिर जिनकी सुधि लेने आप आए हैं वे देवी सीता तो इस समय स्वयं पावक रूप में ही है। तो थोड़ी सी अग्नि यहीं से ले लो और निशाचरों के नाश का शुभारंभ करो जैसा कि स्वयं श्री राम जी ने सीता हरण प्रसंग के पूर्व सीता जी से कहा था :–

तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा।
जौ लगि करौं निसाचर नासा।।

त्रिजटा जी ने अपना स्वप्न सुनाते हुए यह संकेत दिया कि, रावण सहित सारी सेना मार दी गई है फिर जो रावण एक माह की अवधि में अपने अनुरोध को अस्वीकार करने पर भय दिखा कर गया है तो त्रिजटा जी ने कहा कि रावण का अंत तो उसके पहले ही हो जाएगा। श्री हनुमान जी ने त्रिजटा की यह बात भी ध्यान से सुनी होगी–

यह सपना मैं कहउँ पुकारी।
होइहि सत्य गएँ दिन चारी।।

उन्हीं शब्दों को श्री हुनमान जी सीता जी से कह रहे हैं कि माता आप चिंता छोड़िए –

कछुक दिवस जननी धरु धीरा।
कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा।।

अर्थात् हे माता! एक माह तो छोड़िए कुछ दिन और धीरज रखिए श्री रामचंद्र जी वानरों सहित यहां आवेंगे और निशाचरों को मारकर आपको ले जाएंगे। इस प्रसंग में यह भी स्पष्ट होता है कि एक स्त्री दूसरी स्त्री की ऐसी स्थितियों में कैसे रक्षा कर सकती है यह स्त्री धर्म त्रिजटा जी से सीखा जा सकता है ।

महेंद्रा स्कावयर्स, फ्लेट नं. 107 बावडिया कला भोपाल
मो. नं. 9893119507

कविता

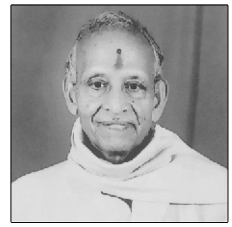

महाकवि तुलसीदास जी का पावन स्मरण

डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त

जन्मे कलिकाल नशावन को।
श्रद्धांजलि है मनभावन को।।

बिदुषी हुलसी के वर-नन्दन।
आत्माराम के अभिनन्दन।
कर सृजन रसमयी रामायन।
हरषाया जन-जन का जीवन।
भक्तों में उन सा पावन को?
जन्मे कलिकाल नशावन को।
श्रद्धांजलि है मन-भावन को।।

करते थे वे निष्काम-काम।
जपते थे संतत राम नाम
मन अमल-विमल अभिराम राम।
जीवन उनका मधुरिम ललाम।
जन्मे जग-जाल जलावन को।
जन्मे कलिकाल नशावन को
श्रद्धांजलि है मन-भावन को।।

तुलसी ने इतना सुयश लिया।
हित-हेतु राम का नाम दिया।
कल्याणमयी दी रामायण।
उपकृत जिससे भू का जन-जन।
तुलसी-सा लोक-लुभावन को।
मन से श्रद्धा मन-भावन को।।
श्रद्धांजलि है मन-भावन को।।

श्रीमती लक्ष्मी गुप्ता भवन, उद्योग विभाग के पास
सिविल लाइंस दतिया (म.प्र.) 475661
सम्पर्क सूत्र – 9826249448

आलेख

उमेश पाठक

तात कृपा कर कीजिए सोई।
जाते अवध अनाथ न होई।।

विश्ववन्द्य तुलसीदास जी की यह प्रार्थना पाँच शताब्दी बाद पूर्ण हो रही है।

अवधपुरी प्रभु आवत जानी। भई सकल सोभा कै खानी।।

रा.च.मा. 7/8/9

अब अवधपुरी में प्रभु के आने की तिथि निश्चित हो चुकी है इसलिए सम्पूर्ण अयोध्या सज गई इसका कारण मैं अपने शब्दों में व्यक्त करता हूँ यह चौपाई सप्तम सोपान उत्तरकाण्ड के 8वें दोहे की 9वीं चौपाई है। (यानी सप्तमी, अष्टमी, नवमी, सनातन की तीनों देवियों—महासरस्वती, महालक्ष्मी, महाकाली की उपासना तिथियों) तुलसीदास जी का जो ये भाव प्रकट हुआ है वह मेरे शब्दों में त्रिदेवियाँ समवेत है तो वहाँ शोभा में क्या कमी रह जायेगी इसलिए अवधपुरी शोभा की खानी हो गयी है और अब भी सभी अपने स्तर पर शोभा बढ़ाने में लगे।

जब रामजी ब्रह्माण्ड के संचालक हैं तो उनकी अयोध्या में उनके ही मंदिर को तोड़ा गया। दीर्घावधि तक रामभक्त बलिदान होते रहे। ऐसा क्यों हुआ इसका उत्तर तुलसी दास जी देते हुए विश्वास दिलाते हुए लिखते हैं —

आरत लोग राम सब जाना। करुनाकर सुजान भगवाना।

रा.च.मा. 2/243/1

अयोध्या में पाँच सौ वर्ष बाद भगवान का नया भवन भव्य मन्दिर बनाया जा रहा है। प्रभु पाँच सौ वर्ष बाद अपनी अयोध्या में लौट रहे हैं। इतना तो प्रभु वन में गये थे तब भी समय नहीं लगा था। सनातनियों! यह स्मरण रहना चाहिए कि हमारे प्रभु की प्रतीक्षा 'अहल्या' और 'शबरी' से अधिक नहीं है प्रभु की इच्छा और निमित्त से सब कार्य होते हैं।

रामजी के पूर्वजों की जो कीर्ति और प्रताप है ऐसा अन्यत्र कहीं भी नहीं है। उनके पूर्वजों का त्याग, तप, दान अद्वितीय है वे हेतु सूर्य की सन्तति है। जहाँ ब्रह्म और शक्ति का अधिरचन युग—युग तक सोचित होता रहा तब उन कीर्तिवानों का तपस्या का संगठित रूप 'राम' के रूप में वहाँ प्रकट हुआ। जिनके बड़े त्यागी,

तपस्वी, दानी, ब्रम्हनिष्ठ मर्यादित आचरण करने वाले होते हैं उनके कुल में कोई न कोई प्रतापी यशस्वी प्रकट होता है। 'राम' अपने सभी बड़ों पूर्वजों के सत्वगुण का संघनित रूप है। परिवार के बड़े अपने आचरण से पवित्र पावन धर्मनिष्ठ होते हैं उनके बालक ही 'रामचरित' में अनुरक्त होते हैं। 'सूर्यवंशियों' के आचरण जहाँ होंगे वहाँ 'रामजी' अवतरित होंगे।

प्रभु श्रीराम मर्यादा और धर्म का विग्रहवान स्वरूप है विश्व के इतिहास में किसी भी काल में किसी धर्म, मत, पंथ और मज़हब में ऐसा नहीं हुआ कि उसके अवतारी महापुरुष का गृह और विग्रह नष्ट कर दिया गया हो और उसे पाँच सौ वर्षों से अधिक समय बाद न्यायालय के आदेश से उनका निवास बनाने का उपक्रम सृजित हुआ हो। राम इस अर्थ में भी मानवेतिहास के एकमेव ही है। प्रश्न यह है कि 'धर्म' और 'मर्यादा' की स्थापना का जनमानस समर्थक है? यदि ऐसा सर्वमान्य होता तो यह व्यवधान और विलम्ब नहीं होता कि पाँच सौ वर्ष बाद भी कुछ लोगों के उदर और मस्तिष्क में शूल है। राम के अतिरिक्त किसी को भी त्रिग्रहण धन का स्वरूप नही कहा गया है। इस पूरे घटनाक्रम से यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी मनुष्य धर्म, नीति और मानवीय मूल्यों के साथ नहीं खड़ा रहना चाहते। धर्म, नीति, और मानवीय मूल्य आत्मानुशासन और अनुशासन की बात करते हैं।बौद्धिक दिव्यांगों को तुलसीदास जी का यह कथन समझ में नहीं आयेगा–

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुनगान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भवु सिंधु बिना जलजान।।

रा.च.मा. 5/60

राम तमोगुण का विनाश और सत्व का स्थापन करने के लिए अवध में अवतरित होकर वह सब अपने शिशु अवस्था से राज्य संचालन करने तक करते हैं जिससे सभी सुखी हों–

जेहि विधि सुखी होहिं पुर लोगा।
करहिं कृपा निधि सोइ संयोगा।।

रा.च.मा. 1/205/5

जब राम ने अवध का राजपद सुशोभित किया तब पहला राज्यादेश था–

जौं अनीति कछु भाषौ भाई।
तौं मोहि बरजहु भय बिसराई।।

जब राष्ट्र सत्ता रामादर्शियों के हाथ में आती है तो 'सब का साथ–सबका विकास' होता है।

राम बैर भाव का विसर्जन करा देते हैं समता की स्थापना 'राम–राज्य' है। इस की स्थापना के लिए राष्ट्र अग्रेसित हो रहा है और होना भी चाहिए रामादर्श में–

बयरू न कर काहू सन कोई।
राम प्रताप विषमता खोई।

र.च.मा. 7/20/8

सत्ता संचालक का व्यक्तित्व व कृतित्व जनमानस में अनुकरणीय होता है। रामादर्श से मन्थरा बुद्धि सामंजस्य नहीं बिठा पाती। सामाजिक परिवार को छिन्न भिन्न करने का उपक्रम करती रहती है। जबकि जनमानस–

रघुपति चरित देखि पुरीवासी।
पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी।

र.च.मा. 7/20/6

मर्यादा की अनुपालना व्यक्त की स्वच्छन्दता में बाधक होती है। राम नीति व शास्त्र के अनुशासन में प्रतिबद्ध रहते हैं इसलिए मानवेत्तर प्राणियों में भी संवाद के समय कहा गया–

सब कर मत खगनायक एहा।
करिअ राम पद पंकज नेहा।।

रामानुराग वहाँ पक्षियों के मध्य भी है और वर्तमान में भी विलुप्त गिद्ध अयोध्या में दिखाई दे रहे हैं।

विधि हरि सम्भु नचावनि हारे।

2/26/1

कुम्भकरणी नींद से जागा हुआ दशानन भ्राता जानता है–... सिव विरंचि सुर जाकहिं सेवक 6/62/5 तो यह कहता हुआ समर के लिए चलता है– लोचन सुफल करौ मैं जाई – रा.म. 6/62/7 उसे पता था कि एकमेव श्रीराम जी ने अत्यल्प समय अर्द्धमुहूर्त में चौदह हजार राक्षसों का संहार कर दिया था–

खरश्च निहतः संख्ये दूषणस्त्रिशिरास्तथा।
चतुर्दश सहस्राणि राक्षसानां महात्मनाम्।।
निहतानि क्षणेनैव रामेणासुरसुरक्षिणा।

अध्यात्मरामायण 3/5/43/44

राम की सर्वव्यापकता को 'व्यासजी' ने 'अध्यात्म रामायण' में विविध अवसरों पर वर्णित किया है वे परमात्मा है, अनादि है, अद्वितीय पुरुषोत्तम हैं आत्मरूप से सबके अन्तःकरण में वे सम्पूर्ण विश्व का परिसंचलन करते हैं–

रामः परात्मा प्रकृतिरनादिरनंतः
एकः पुरुषोत्तमो हि।
स्वमायमा कृत्स्मिदं सृष्ट्वा,
नमोवदन्तिर्बिहितो स्थितो यः।
सर्वान्तरस्थोऽपि निःरठ
आत्म स्वमायमा सृष्टामिदं विचष्टे।

1/1/17/18

रामजी का जीवन सम्पूर्ण जीवन कहा गया है अपूर्ण नहीं जिस समय जो किया जाना है वह उसी कार्य को पूर्ण मनोयोग से करते हैं। राम– नीति, रीति, प्रीति, आदर्श, त्याग, सब कुछ हैं। नियम की प्रधानता का नाम श्रीराम जी हैं। राम– पिता–'दीन मोहि कानन राजू' में विचलित न होने का स्वरूप है। माता कैकयी के प्रति रामानुराग चित्रकूट में भेंट के समय–

प्रथम राम भेंटी कैकेई।
सरल सुभाय भगत मति भेई।।
पग परि कीन्ह प्रबोध बहोरी।
काल करम विधि सिर धरि खोरी।

2/243/7–8

और राम जब अयोध्या वापस लौटते हैं तब कैकेयी–'रामहि मिलत कैकयी हृदय बहुत सकुचानि' की स्थिति होती है पर उनके पुत्र भरत श्री रामचन्द्र जी के चरण कमल का रसपान करने के लिए रसिक भ्रमर हैं–

रस रसिक मधुकर भरत भूरी भागी।।
मणि रामचन्द्रानुरागी।

विनय पत्रिका 39/1

भरत का रामानुराग पिता दशरथ का मरण भुला देता है–

भरतहि विसरेहु तात पितु मरन,
सुनत राम वन गौनु।

रा.च.मा. 2/160

भरतजी अपनी माता कैकेयी को भी कह देते हैं–

वर मांगत मन भई न पीरा।
गरी न जीह मुँह परेउ न कीरा।।

रा.च.मा. 2/161/2

भरत का यह संदेश सम्पूर्ण मानवों को वरण्य है–

हित हमार सियपति सेवकाई।

रा.च.मा. 2/178/1

नाम लेतु भवसिंधु सुखाहीं।

रा.च.मा. 1/25/4

प्रभु रामजी का स्मरण करने से–

मिटहहि पाप प्रपंच सब अखिल अमंगल भार।
लोक सुजसु परलोक सुख सुमिरत नामु तुम्हार।।

रा.च.मा. 2/263

तीर्थदेव प्रयाग से भी भरतजी यही कहते है–

अरथ न धरम न काम रुचि
गति न चहौं निरवान।
जनम जनम रति राम पद
यह वरदानु न आन।।

रा.च.मा. 2/204

वेदव्यास जी ने श्रीमद्भागवत– 9/11/22–23 में श्रीराम जी के बारे में लिखा–जिसने राम को छुआ या जो राम के द्वारा छुआ गया, जिसने राम को देखा या राम के द्वारा जो देखा गया जो उनके साथ बैठा, उठा या चला अथवा कुछ बात की वे सब के सब उत्तर कौशल के निवासी उन सांतानिक लोगों में भगवान के साथ ही चले गए, जहाँ बड़े–बड़े योगीन्द्र बड़े कठिन साधन से पहुँच पाते हैं। जो पुरुष अपने कानों से भगवान राम का चरित्र सुनता है, उसे सरलता, कोमलता आदि गुणों की प्राप्ति होती है। परीक्षित वह समस्त कर्म बन्धन से मुक्त हो जाता है–कल्याण रामभक्ति अंक–33

महर्षि वाल्मीकि के बारे में यह भी कहा जाता है कि वे महाराज अवधेश दशरथ के मंत्री भी थे। वे रामजी के बारे में कहते हैं–

चिदानंदमय देह तुम्हारी।
विगत विकार जान अधिकारी।
रा.च.मा. 2/127/5

विश्ववन्द्य तुलसीदास के राम–'जगत प्रकाश प्रकाशक रामू' है। उनकी रामप्रियता विशुद्ध सांसारिक भाव की उपमा से प्रकट हुई–

कामिहि नारि पिआरि जिमि
लोभिहि प्रिय जिमिदाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर
प्रिय लागहु मोहि राम।।

प्रभु श्रीराम जी–भारत की सत्ता से जो कह कर गये उसकी अनुपालना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे याचक बन गये हैं–

भूयो भूयो भाविनो भूमिपाला
नत्वा नत्वा याचते रमचन्द्रः।
सामान्योद्यं धर्मसेतुनरणां
काले पालनीयो भवद्रिः।।

भविष्य में होने वाले भारत के सत्ताधीशों 'राम' तुमसे यही चाहता है कि वेद–शास्त्रों गौ–ब्राह्मणों की रक्षा सेवा परिपालन जैसे मैंने किया है वैसा ही तुम भी करना।

शत्रु भी रामाचरण और गुणों की प्रशंसा करते हैं–'बैरिउ राम बड़ाई करहिं' ये राम मर्यादा के कारण ही तो है। अयोध्या के लोग तो यह कहते हैं–

जहाँ राम तहँ अवध निवासू।।

कृष्ण की गोपियाँ कृष्णानुराग में ब्रज नहीं छोड़ती पर अवध के निवासी रामानुराग में वन में पीछे–पीछे चलते हैं। सेतू निर्माण के समय रामजी ने जिन पाषाणों को छोड़ा डूब गये क्योंकि राम ने छोड़ा। ऐसें अवध के जनमानस को राम ने छोड़ दिया था अतः वे भी शोक में डूब गये।

रामजी का अन्तःकरण कैसा विचित्र है कि अपराध कोई करे और अपराधी वे अपने को मान लेते हैं। नारद के द्वारा दिया गया 'शाप' ग्रहण करना यही तो है, पर नारद को यह बात तब समझ आती है जब–'प्रमदा सब दुख खानि' का अन्तः चक्षु खोलने वाला संवाद होता है। रामजी ने जीवन में एक पत्नीव्रत का संकल्प सीताजी के समक्ष लिया था। रामजी का अनुकरण समाज करे 'रामजी की यह याचना है'। दूसरी ओर रामजी लोकनायक है इस कारण समाज की दृष्टि उन पर रहती है। पंचवटी में सीताजी ने जब स्वर्ण मृग को देखा तो रामजी से उसको प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त कर दी तब मैं कहता हूँ–

नारी आँखों दिखता स्वर्ण मृगों का चर्म।
तब राम सरीखे भूलते क्या है अपना धर्म।।

इस कारण नारी से दूर रखने का उपक्रम किया और नारद के अज्ञानान्धकार का शाप अपने सिर धारण कर लिया था पर सीताजी का रावण द्वारा हरण होने का जो कलंक रामजी पर लगा उसे उन्होंने अपने पुरुषार्थ से धोया–

अवमानश्च शत्रुश्च युगपत्निहतौ मया।

अद्यं पौरुष दृष्टम्य में सफलः श्रमः।।

वार्ता.युद्ध. 115

अब लोकवाद–(रावणादकपरिलुप्तांदृष्तां दुष्ट चक्षुषा) के कारण राम जी ने कहा सीता अब मेरा आपमें कोई प्रयोजन नहीं है। अब आप जहाँ इच्छा हो चली जाओ–'एता दश दिशो भद्रे कार्यमस्ति न मे त्वया' पर मिथिलेश अग्निपरीक्षा से अपने आप को विशुद्ध चरित्र सिद्ध करती है–'विशुद्धा त्रिपु लोकेषु मैथिली जनकात्मजा'।

तुलसीदास जी के रामचरितमानस की सीता जी रावण से अशोक वाटिका में 'तृण धरि ओट कहति वैदेही' की भाँति बात की हैं।

कुलीन और शौर्यवान के लिए कलंक मृत्यु से भी बढ़ कर होता है। तुलसीदास जी ने सीताजी की अग्निपरीक्षा का कारण बताया है–

सीता प्रथम अनल मैं राखी।
प्रकट कीन्हि चह अन्तर साखी।

रा.च.मा. 6

कुल की–'मर्यादा' 'कीर्ति' युगों और पीढ़ियों के तप का परिणाम होती है इसलिए उसे सन्तति द्वारा तोड़ा और नष्ट नहीं किया जाना चाहिए। रामराज्य की प्रजा को जो सन्देश रामजी देते हैं वो दिव्य है इस लोक के सुख की ही नहीं परलोक भी सुखद हो यह बात वे अपने नागरिकों के साथ साझा करते हैं– जैसे संविधान संसद और न्यायव्यवस्था के प्रति निष्ठा की बात आज की सत्ता और उसके अंग करते हैं। रामजी अपने प्रथम राज्य मन्त्री मण्डल और प्रजाजनों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं–

सोई सेवक प्रियतम मम सोई।
मम अनुशासन माने जोई।।

7/42/5 रा.च.मा.

बड़े भाग मानुष तन पावा।
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा।।
एही तन कर पल विषय न भाई।
स्वर्गउ स्वल्प अन्त दुखदाई।।
नर तनु पाइ विषय मन देहीं।
पलटि सुधा ते सठ विष लेहीं।।
ताहि कबहुँ भल कहइ न कोई।
गुंजा ग्रहह परस मनि खोई।।
आकर चारि लखि चौरासी।
जाति जीव जल-थल नभ वाली।।
फिरत सदाँ माया कर प्रेरा।
काल कर्म सुभाव गुन घेरा।।
कबहुँक करि करुना नर देही।
देत ईस बिनु हेतु सनेही।।
नर तन भव वारिधि कहँ बेरो।
सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो।।
करनधार सदगुरु दृढ़ नावा।
दुर्लभ साज सुलभ करि पावा।।
जो न तरे भव सागर नर समाज अस पाई।
सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाई।

रा.च.मा. 7/43/1–8/44

श्रीराम ने अपने इस संदेश में–भक्ति, सत्संगति, विप्रपूजा, (गुरु वन्दन) निश्चलता, जप, तप, उपवास, नीरक्षीर, सज्जनों से प्रीति, आदि का विस्तार पूर्वक सन्देश दिया है यह सर्वकालिक प्रासंगिक सम्पूर्ण मानव समाज के लिए है इसलिए राम मानवादर्श हैं। आज की प्रजा सत्ता से जो माँगती है – अस्पताल, थाने, न्यायालय, मनोरंजन के साधन आदि जिन्हें भी सत्तायें उपलब्ध कर नहीं पाती हैं। तब पौरुषवान सत्ताधीश रामजी काकभुशुण्डि जी को कहते हैं–

काकभुशुण्डि मागु बर
अति प्रसन्न मोहि जानि।
अनिमादिक सिधि अपर रिधि
मोच्छ सकल सुख खानि।।

काकभुशुण्डि ने अविरल भक्ति का वरदान

माँगा। वर्तमान काल की सत्ता की प्रजा को समुचित शिक्षा और जीविका अर्जन के अवसर की ही अपेक्षा बची है। उच्चादर्श, मानवीय मूल्य व पारलौकिक समझ से मानव को अलग कर दिया है वह भी सत्ता उपलब्ध नहीं कर पाती है।

काकभुशुण्डि ने निश्चल कर्म विवेक (भक्ति) को माँगा है। राम इस पर रीझ जाते हैं। मनुष्यों को समझना चाहिए राम काक देह पर रीझते गीध को पिता कहकर श्राद्ध संस्कार करते हैं वानर, रीछ, भालू से मित्रभाव बनाते हैं प्रकृति के विविध अंगों से संवाद करते हैं यही तो राम का विराट अवध है। ऋषियों मुनियों के आश्रमों में जाकर उनका सुख–दुःख साझा करते हैं, शवरी प्रतीक्षा समाप्त और अहल्या का जड़वत् स्वरूप चैतन्य बना देते हैं। राम प्रभु कृपा से–**सब सुभ गुन बसिहहि उर तोरे** की स्थिति बनती है। कर्तव्यनिष्ठों के लिए रामजी का कथन है–

कबहु काल न व्यापिहि तोही।
सुमिरेसु भजसु निरंतर मोही।।

रा.च.मा. 87

चित्रकूट आश्रम में भरत जी के पहुँचने पर कुशलक्षेम के बहाने राम राजनीतिज्ञों को अनेक सूत्र देते हैं–

कच्चिदात्मसमाः शूराः श्रुतवन्तो जितेन्द्रियाः।
कुलीनाश्चेङ्गितज्ञाश्च कृतास्ते तात मन्त्रिणा।।
मन्त्रो विजयमूलं हि राज्ञां भवति राघव।
सुसंवृतो मन्त्रधरैरमात्यैः शास्त्र कोविदा।।

वा.रा.अयोध्या 100

कच्चित् सहस्त्रेमूर्खाणामेकमिच्छसि पण्डितम्।
कच्चिन्नोचग्रेण दण्डेन भृशमुद्वेजिताः प्रजाः।
राष्ट्रे तवावजानन्ति मन्त्रिणः कैकयीसुत।

वा.रा. अयोध्या 100

राजा को इन सब पर विशेष दृष्टि रखना चाहिए– मन्त्री, पुरोहित, युवराज, धनाध्यक्ष, राजा के आँख से सेवकों को काम बताने वाला, प्राड्विवाक (अधिवक्ता) न्यायाधीश (धर्मासनाधिकारी) व्यवहार–निर्णेता, सभा, सेनानायक, कर्मचारियों को वेतन देने वाले, राजा से धन लेने वाले, नगराध्यक्ष, राष्ट्रसीमापालक, वनरक्षक, दुष्टों को दण्ड देने वाला अधिकारी, जल, पर्वत, वन, दुर्गम भूमि की रक्षा करने वाला। राजा को ऐसे लोगों से बचना चाहिए जो परमार्थ बुद्धि से विचलित करें ये अज्ञानी अपने आपको पण्डित मानते हैं। भरत! अयोध्या हमारे वीर पूर्वजों की निवास भूमि है उनका जैसा नाम वैसा ही गुण भी है–

वीरैरध्युषितां पूर्वमस्माकं तात पूर्वकैः।
सत्यनामां दृष्द्वारा हस्त्यचरथसंकुलाम्।।

राजा को व्यापारियों कृषकों स्त्रियों की सुरक्षा और सुख ध्यान रखना चाहिए, अपने अस्त्र–शस्त्र के निर्माण और विकास करते रहना चाहिए। उनसे कभी संतुष्ट नहीं होना चाहिए। प्रतिदिन पूर्वान्हकाल में अपने राज्य के लोगों का अभिवादन (संचार माध्यम) से करना और स्वीकारना चाहिए। देवता, पितर, ब्राह्मण (शिक्षक), अभ्यागत, योद्धा, चिकित्सक आदि के लिए धन खर्च करते रहना चाहिए। वा०रा० अयोध्या 100

विराट अवध (सृष्टि मात्र) के सुख सौख्य और आवश्यकता के लिए राम का चिन्तनादर्श मनीषियों कवियों के चिन्तन में अभिव्यक्त है बस उसके साथ जुड़ना अध्ययन अनुशीलन करना है। वह श्याम लोहे जैसे मानस को भी हिरण्य ज्योतिर्मय बना देगा। अवधपति ने विराट अन्ध पर अपनी कृपा दृष्टि बना रखी है।

जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हि करहिं चैतन्य।
अस समर्थ रघुनायकहि भजहि जीव ते धन्य।।

मो. चौदहपौर, सोरों सूकरक्षेत्र, जनपद–कासगंज, उ.प्र. मो. 7599363063

आलेख

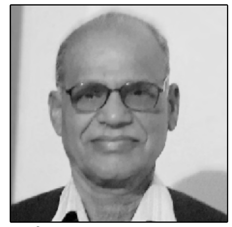

मानस में ज्योतिष

कैलाश चंद्र शर्मा

कवि कुल शिरोमणि कलि पावनावतार श्री गोस्वामी तुलसी दास जी ने अपने महा काव्य रामचरित मानस में सभी वेद, वेदांग, आगम, निगम, पुराण आदि का समावेश किया – नाना पुराण निगमागम के अनुसार समस्त ग्रंथों का सार लिया है। श्री तुलसी दास जी ने ज्योतिष शास्त्र का भी गहन अध्यन किया था।

रामाज्ञा प्रश्न नामक रचना ज्योतिषियों के लिए प्रकाश स्तंभ हैं। इस कालजयी ग्रंथ का लेखन भी ज्योतिष योग अनुसार हुआ है –

संवत सोरह सै एकतीसा। करउ कथा हरि पद सीसा।।
नौमी भौम बार मधु मासा। अवधपुरी यह चरित प्रकासा।।

जो योग श्रीरामावतार के समय था, लगभग वही समय मानस लेखन के प्रारंभ में था। गोस्वामी जी ने ज्योतिष की सभी विधाओं का मानस में वर्णन किया है। जैसे ग्रह की अनुकूलता, प्रतिकूलता, स्वप्न, शकुन, अंग फड़कना, उल्कापात होना, हर्ष शोक होना पंचांग के पांचों अंग – ग्रह, वार, तिथि,योग,नक्षत्र आदि।

सुर समूह विनती करि पहुंचे निज निज धाम।
जग निवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक विश्राम।।

देवताओं के समूह विनती कर अपने धाम को पहुंचे। समस्त लोकों को शांति विश्राम देने वाले प्रभु का प्राकट्य हुआ। राम जन्म के समय मधु मास की नवमीतिथि, पुनर्वसु नक्षत्र ग्रह वार तिथि अभिजीत मूहर्त मध्य दिवस था सभी अनुकूल थे। आदि कवि वाल्मीकि जी ने श्रीराम के जन्म कुंडली का विस्तार से वर्णन किया है। जन्म के समय कर्क लग्न था, पांच ग्रह अपनी उच्चतम अवस्था में थे। चंद्र गुरु का संयोग था, अनेक उत्तम राज योग गज केशरी योग थे।

एक साथ पांच ग्रहों का उच्च्व राशि गत होना दुर्लभ योग होता है, केवल ईश्वरी अवतारों के लिए ऐसे योग बनते हैं। इस सर्व श्रेष्ठ योग में जन्मा पुरुष मर्यादित

होता है। परमात्मा श्रीराम मर्यादा की पराकाष्ठा थे। मानस में ज्योतिष अंतर्गत हस्त रेखा प्रकरण का उल्लेख है। सती के देह त्यागोपरांत पर्वत राज हिमाचल के घर गौरी अवतरित हुई।

त्रिलोक विचरण कर्ता देवर्षि नारद आए। पिता ने कन्या की रेखाएं नारद जी को दिखाई। तब नारद जी ने कहा कि जोगी, जटिल, अकाम, नग्न और अमंगल वेष वाला इस कन्या का पति होगा। नारद जी ने बताया कि ये सभी गुण भगवान शिव में है, कन्या को शिव को पति रूप में प्राप्ति के लिए घोर तप करना होगा। पार्वती जी को स्वप्न में किसी ब्राह्मण ने तप करने का उपदेश दिया।

मानस में गोस्वामी जी ने अंग फड़कने का वर्णन करते हुए लिखा है कि श्रीसीता जी ने पुष्प वाटिका में श्रीराम दर्शन कर उन्हे पति रूप में पाने के लिए, श्री भवानी जी के मंदिर में सुभग वर की याचना की। हे, पर्वत राज हिमालय की पुत्री, कार्तिकेय और गणेश जननी, आपका आदि है न अंत है,आपके अमित प्रभाव को कोई नहीं जानता। आपकी सेवा पूजा से सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। आप सबके हृदय में निवास करती हैं। इसलिए मैंने अपना मनोरथ प्रगट नहीं किया है। गौरी जी प्रसन्न हुई और सीताजी को हर्ष हुआ उनके शुभ अंग फड़कने लगे।

जानि गौरि अनुकूल,
सीयहिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल, मूल
वाम अंग फरकन लगे।।

मानस में शकुन, अप शकुन का वर्णन मिलता है, शिव धनुष भंग होने पर श्रीराम सीता का परिणय हुआ। यह शुभ संदेश अयोध्या नरेश को दिया गया। राजा दशरथ जी ने बारात सजाकर शुभ मूहर्त में प्रस्थान किया।

बाबा तुलसी ने बारात प्रस्थान के समय जो शकुन हुए उनके बारे में कहते है कि नील कंठ पक्षी, नेवले का दर्शन हुआ। सौभाग्यवती स्त्रियां कलश लिए हुए सन्मुख आईं। मृग की टोली का दाहिनी ओर जाना, दही मछली का दिखना, विप्र पुस्तक लिए आना मनोवांछित फल देने वाले शकुन सच होने के लिए आए।

मंगल सगुन सुगम सब ताके।
सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाके।।

स्वयं सगुण ब्रह्म जिनके पुत्र हो, उनके लिए सभी मंगल शकुन सुलभ होते हैं।श्रीराम के राज्याभिषेक की सूचना से सारे अवधवासी हर्ष उल्लास मनाते हैं। श्री रघुवर सीताजी के शुभ शकुन में नेत्र, भुजा फड़कते है। श्रीराम कहते हैं कि यह श्री भरत के आगमन की सूचना दे रहे है।

वाल्मीकि रामायण में प्रसंग है कि राजा दशरथ को दुःस्वप्न आते हैं। वे गुरु वशिष्ठ से कहते है कि मेरे जन्म नक्षत्र रेवती को सूर्य मंगल राहू ने ग्रस लिया है। कुछ अमंगल हो सकता है। देह नाश हो सकती है। अतः श्रीराम को युवराज पद पर प्रतिष्ठित कर दिया जाए। गुरु वशिष्ठ जी ने कहा कि जब श्री राम युवराज बने वहीं शुभ मुहूर्त है। गुरूजी ने कोई मूहर्त नहीं बताया।

सुदिन सुमंगलु तबहि जबु राम होई जुबराजू।।

श्रीराम के वन गमन के समय लंका में अपशकुन होने लगे। अयोध्या में अत्यंत शोक छा गया, देवलोक में हर्ष ओर विषाद होने लगे।

कुसगुन लंक अवध अति सोकू।
हर्ष विषाद बिबस सुर लोकू।।

श्रीराम, जानकी, लक्ष्मण हर्षित हो कर गुरु के चरणों में नमन कर, गणेश जी पार्वती जी, महादेव जी स्मरण कर आशीर्वाद लेकर वन को चले।

श्रीराम के वन पथ में अनेक ग्रामवासी मिलते है, जो उनके अंगों में राज चिन्ह देख कर प्रेम पूर्वक कहते है कि आप राज चिन्ह होते हुए भी वन में भटक रहे, कहीं हमारे ज्योतिष शास्त्र झूठ तो नहीं हैं।

गंगा पार कर श्रीराम चित्रकूट में निवास करते है। मंत्री सुमंत अयोध्या लौटते हैं। राजा दशरथ श्रीराम के वियोग में व्याकुल हैं।

काल करम बस होई गोसाईं।
बरबस रात दिवस की नाईं।।

सुमंत जी ने कहा कि राजन दुःख–सुख, हर्ष–शोक, ये काल क्रम से होते हैं, जैसे रात दिन होते हैं, धीरज रखिए। श्रीराम पुनः आपसे मिलेंगे।

राम-राम कहि राम कहि राम राम कहि राम
तनु परिहारि रघुवर विरह-राउ गयहु सुर धाम।।

अयोध्या नरेश ने राम विरह में प्राण त्याग दिए। जब से अयोध्या में अनर्थ प्रारम्भ हुआ, ननिहाल में श्री भरत जी को भयानक स्वप्न एवं अपशकुन होने लगे अनिष्ट शांति के लिए वह शिव अभिषेक कर ब्राह्मणों को दान देते हैं। अयोध्या से दूत आ पहुंचे, गुरुजी की आज्ञा पा कर भरत जी नगर को आते हैं। नगर के समीप अपशकुन होते है, सियार बोलते हैं, नदी, तालाब नगर शोभा हीन हो गए हैं। लोग जोहार कर कुछ कहते नहीं हैं।

खर सियार बोलही प्रति कूला।
सुनि सुनि होई भरत मन सूला।।

भरत जी ने पिता का दाह संस्कार किया एवं उत्तरोत्तर कार्य संपन्न किए।

राज सभा आमंत्रित की गई। वशिष्ठ जी ने भरत जी को सांत्वना दे कर कहा कि

सुनहुँ भरत भावी प्रबल
बिलखि कहेहु मुनि नाथ।
हानि लाभ जीवन मरण,
यस अपयस विधि हाथ।।

भरत जी राज पद स्वीकार नहीं करते है और श्रीराम को लौटाने के लिए चित्रकूट की ओर प्रस्थान करते हैं। विरहाकुल अयोध्यावासी भी श्री भरत जी के साथ चलने को उत्सुक हैं। सबको मंगल सूचक शकुन हो रहे, नेत्र बांहें फड़क रही है। श्रीराम जी के दर्शन होंगे। सभी आशान्वित हो रहे है। तुलसीदास जी लिखते हैं

मंगल सगुन होई सब काहू।
फरकहि सुखद बिलोचन बाहू।

चित्रकूट में सीता जी ने स्वप्न देखा कि समाज सहित भरत जी यहां आए हैं। सभी संतप्त और दुःखी हैं, माताएं अशुभ वेश में है स्वप्न सुनकर राघव के नेत्रों में जल भर आया। सोच विमोचन स्वयं सोच वश हो गए।

सुनि सिय सपन भरे जल लोचन।
भये सोच बस सोच विमोचन।।

अध्यात्म रामायण में मूहर्त ज्योतिष का वर्णन आया है कि जटायू ने श्रीराम को सीता हरण का समाचार सुनाया और कहा कि बिंद मुहर्त में सीताजी का हरण हुआ है। जिसमे खोई हुई वस्तु स्वामी को पुनः प्राप्त हो जाती हैं, यह मूहर्त 22 घटी पर होता है, जिसका समय मान 8 घंटे 10 मिनिट होता है भारतीय मानक समय अनुसार सूर्योदय से आठ घंटे दस मिनिट यानी दिन के 2 बजकर 10 मिनट पर यह समय होता है। इसी समय रावण ने सीता जी का हरण किया था।

मानस में महत्वपूर्ण स्वप्न त्रिजटा राक्षसी का है, जिसका श्रीराम के चरणों में प्रेम हैं। लंका दहन करना श्री हनुमान जी की कार्यसूची में नहीं था। करुणानिधान श्रीराम ने त्रिजटा को स्वप्न के माध्यम से यह निर्देश दिया।

सपने वानर लंका जारी।
जातुधान सेना सब मारी।।
खर आरूढ़ नगन दस सीसा ।
मुंडित सिर खंडित भुज बीसा।
एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई।
लंका मनहु विभीषण पाई।।

यह सपना शत प्रतिशत सत्य हुआ। वानर सेना के लंका प्रस्थान समय जनक नंदिनी को शुभ संकेत हुए, रावण को अशुभ शकुन हुए। रावण वध के समय लंका में अशुभ संकेत हुए जैसे उल्कापात होना बादल से रक्त धूल की वर्षा होना, आकाश में पुच्छल तारे का उदय होना, देवताओं का व्याकुल होना आदि।

वनवास अवधि पूर्ण कर राघवेन्द्र सरकार का अयोध्या आगमन हुआ, तब श्री भरत जी को शुभ शकुन होने लगे, दाहिनी भुजा एवं नेत्र फड़कने लगे, शीतल मंद हवा बहने लगी।

भरत नयन भुज दचछिन फरकत बार हि बार।
जानि सगुण मन हरष अति लगे करन विचार।।

कौशल्या नंदन श्रीराम के शुभ आगमन का संदेश अंजनिनंदन द्वारा श्री भरत जी को प्राप्त हुआ। नगर में हर्षोल्लास छा गया, माताएं आनंदित हुई, गुरु वशिष्ठ जी ने ब्राह्मणों को बुलाकर कहा कि आज ही शुभ घड़ी शुभ मूहर्त है श्रीराम को राज तिलक करने का।

गुरु वशिष्ठ द्विज लिए बुलाई।
आजु सुघरी सुदिन समुदाई।।
प्रथम तिलक वशिष्ठ मुनि कीन्हा।
पुनि सब विप्रन्ह आयुष दीन्हा।।

अंत में श्री तुलसी दास जी प्रार्थना करते है कि वेद वेदांग पुराण आपको निर्गुण, निराकार, अजन्मा, अनुभव से जानने योग्य बताते हैं कि वह ब्रह्म मन, वाणी से परे है। पर हम तो आपके सगुण रूप का ध्यान करते हुए यश गाते हैं। हे सद्‌गुणों की खान, करुणा धाम प्रभो, हम यह वर मांगते है कि मन कर्म वचन से विकारों को त्याग कर आपके चरणो में प्रीति हो।।

डी 6, आकाशवाणी कॉलोनी, श्यामला हिल्स, भोपाल 462002
मो. 7987718041

आंचलिक समाचार

मंगल गीतों के साथ मनाया राम विवाह महोत्सव

उदयपुरा/रायसेन। नगर के तहसील प्रांगण में स्थित प्रसिद्ध सिद्ध हनुमान मंदिर पर मानस यात्रा का नगर के साहित्यकार श्री गोविंद गोदानी द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर मंगल गीतों के साथ राम विवाह महोत्सव मनाया गया। समारोह में श्री सुरेन्द्र शास्त्री, श्री राजेन्द्र शास्त्री, श्री हरिदास रामायणी, श्री आशीष शास्त्री, श्री नर्मदा प्रसाद रामायणी एवं श्री योगेश पांडे ने प्रसंगानुसार प्रवचन दिया। कार्यक्रम के संचालक अधिवक्ता चतुर नारायण रघुवंशी ने आभार प्रदर्शन किया। महोत्सव में श्री गोपाल वर्मा, श्री राम सिंह चंदेल, श्री नरबर लोधी, मूरत सिंह लोधी, निर्भय सिंह मेहरा, के.एल. विश्वकर्मा, रामबाबू शर्मा, आशुतोष शर्मा, राजकिशोर कौरव, सुरेन्द्र सिंह परमार सहित बड़ी संख्या में मानस प्रेमी जनों ने भाग लिया।

प्रस्तुति सुरेन्द्रनाथ रघुवंशी

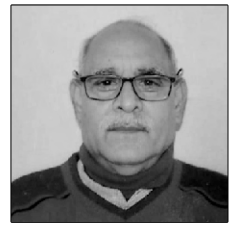

प्यारा मध्यप्रदेश

राजेन्द्र शर्मा 'अक्षर'

प्रगति मार्ग पर हुआ अग्रसर लेकर नव उन्मेष ।
हमारा प्यारा मध्य प्रदेश,हमारा प्यारा मध्य प्रदेश ।।

सांची, चित्रकूट, खजुराहो, उज्जयिनी, माहेश्वर ।
चंबल, क्षिप्रा, सोन, नर्मदा, वेत्रवती, सरिता, सर ।।
भीम बैठका, पंचमढ़ी गौरव के क्षेत्र विशेष ।।
हमारा प्यारा मध्य प्रदेश, हमारा प्यारा मध्य प्रदेश ।।

पुण्य भूमि यह भोज,विक्रमादित्य मनीषी जन की ।
दुर्गावती, अहिल्याबाई, छत्रसाल, भूषण की ।।
कृषक, श्रमिक, वैज्ञानिक इसके बेटे परम बलेश ।।
हमारा प्यारा मध्य प्रदेश, हमारा प्यारा मध्य प्रदेश ।।

विंध्य, सतपुड़ा पर्वतमाला से आच्छादित घाटी।
बांध और बंधानों के जल से सिंचित यह माटी ।।
उद्योगों की भूमि देश का गौरव हृदय प्रदेश ।।
हमारा प्यारा मध्य प्रदेश, हमारा प्यारा मध्य प्रदेश ।।
प्रगति मार्ग पर हुआ अग्रसर लेकर नव उन्मेष ।
हमारा प्यारा मध्य प्रदेश, हमारा प्यारा मध्य प्रदेश ।।

एम–214, गौतम नगर (चेतक ब्रिज के पास), गोविंदपुरा, भोपाल–23 मो. 989416360

आलेख

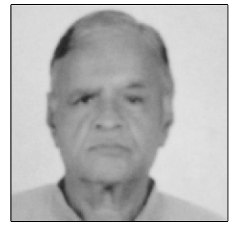

प्रहलाद गुप्ता

हनुमानजी का पांच 'प' का स्पष्टीकरण

हनुमानजी महाराज लंका से रामादल में आ गए, जाम्बवंत को सब समाचार दे दिये। जामवंतजी ने प्रभु श्रीरामचंद्रजी को हनुमानजी की सब कथा सुनाई। हनुमानजी भगवान् रामचन्द्रजी के चरणों में गिर पड़े, बार–बार प्रभु उन्हें उठाने का प्रयत्न करते हैं, परंतु प्रभु में मग्न हनुमान जी उठते ही नहीं हैं। फिर भगवान् ने हनुमानजी को अपने दोनों हाथों से उठाकर ह्रदय से लगा लिया और हाथ पकड़कर अपने अत्यन्त पास बिठा लिया।

कपि उठाय प्रभु ह्रदय लगावा।
कर गहि परम निकट बैठावा ।।

फिर कुछ गंभीर होकर भगवान बोले हनुमान् तुमने ऐसा क्यों किया ? बिना आज्ञा के अशोक वाटिका उजाड़ दी और लंका जला दी, अशोक वाटिका में तो माता सीता की कुटिया थी। वो दो पल वहाँ बैठकर सुख से रहती थीं। लंका में आग लगा दी यदि जानकी जी की कुटिया भी जल जाती तो क्या होता ? तुमने इन बातों का ध्यान क्यों नहीं रखा ? तुमने उनका निवास ही उजाड़कर रख दिया। आपने सेनापति जामवंत की आज्ञा का उल्लंघन क्यों किया।

पवन तनय बल पवन समाना, बुद्धि, विवेक, विज्ञान निधाना।

सकल गुण निधानम्

आप तो बुद्धि–विवेक –विज्ञान के भंण्डार है, फिर ऐसा काम क्यों कर डाला ? जब आप यहाँ से विदा हो रहे थे, तो आपने ही अपनी बुद्धि का परिचय देते हुए विनम्र स्वर में पूछा था –

जामवंत मैं पूछऊ तोही, उचित सिखावन दीजहु मोही। 4/29/10

तब जामवंतजी ने आपको कहा था –

इतना करहुँ तात तुम्ह जाई, सीतहि देखि कहहु सुधि आई।। 5/8/1

हे तात ! तुम सीताजी की सुधि लाकर प्रभु को बता देना, फिर आपने अपनी मर्जी से इतने सारे काम क्यों कर डाले ?

रामादल में प्रभु के वचनों को सुनकर सन्नाटा छा गया। सभी एकदम खामोश हो गए। सब हनुमान जी की ओर टकटकी बांधकर देखने लगे। अब हनुमानजी क्या जवाब देंगे ? हनुमान जी भी एकदम स्तब्ध रह गए, दंग हो गए, कहाँ तो प्रशंसा करना थी, कहाँ स्पष्टीकरण मांग बैठे।

कुछ समय विचार कर हनुमानजी बोले स्वामी इसके पीछे पांच 'प' प्रमुख कारण है –1. आपकी प्रेरणा 2. आपका प्रताप 3. सीताजी का प्रलाप 4. रावण का पाप 5. परमेश्वर की अनुकूलता

आपकी प्रेरणा

हे प्रभु! आपकी ही आज्ञा थी अन्यथा मैं तो –

तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई,
करइ विचार करौं का भाई।।

मैं तो सांस रोककर पेड़ के पत्तों में छिप गया था। आपने ही त्रिजटा के माध्यम से कहलवाया था

सपने वानर लंका जारी,
जातुधान सेना सब मारी।

मैंने तो आपकी ही आज्ञा का पालन कर लंका जलाई और राक्षसों को मारा है, इसमें मैंने सेना पति की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया।

आपका प्रताप

सो सब तव प्रताप रघुराई,
नाथ न कछु मोरि प्रभुताई ।
प्रभु की कृपा भयउ सबु काजू,
जन्म हमार सुफल भा आजू ।।
प्रभु प्रताप मैं जाउ सुखाई।

आपके प्रताप से समुद्र भी सूख जाता है –

लखन कहा जस भाजन सोई,
नाथ कृपा तव जा पर होई।

सीताजी का प्रलाप

मास-दिवस बीते मोहि
मारिहि निषिचर पोच
तजों देह कर बेगि उपाई,
दुसह विरह अब नहि सहि जाई ।।
कह सीता विधि भा प्रतिकूला,
मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला।।

रावण के पाप

रावण ने साधू (हनुमानजी) की अवज्ञा की, अनादर किया जिससे लंका जली –

साधु अवज्ञा कर फलु ऐसा,
जरइ नगर अनाथ कर जैसा।

रावण बहुत ही दुर्वचन और कटु शब्द बोलता है खल, सठ जैसे दुर्वाक्य भी कहता है, सीताजी को एक माह में मारने के लिए भी आज्ञा देता है ये ही सब पाप रावण की लंका जलाने के लिये पर्याप्त हैं।

परमेश्वर की अनुकूलता

हरि प्रेरित तेहि अवसर, चले मरुत उनचास।।

परमात्मा की ही इच्छा से उनचास मरूत उस अवसर पर चले। और –

जारा नगर निमिष इक माही।

परमेश्वर की इच्छा से ही एक निमिश में ही सारी लंका जलकर खाक हो गई। हे प्रभु! मैं तो एक वानर हूँ मेरे अंदर आपने ही प्रवेश कर लंका जला दी और राक्षसों को मार डाला। मैं तो केवल आपके हाथों की कठपुतली भर हूँ, तभी तो वहॉ के राक्षस भी कहने लगे थे –

हम जो कहा यह कपि नहिं होई,
वानर रूप धरे सुर कोई।

हनुमानजी के जवाब सुनकर प्रभु मंद–मंद मुस्कराने लगे और बोले –

सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाही
करि बिचार देखेउ मन माही।।

रामादल में भी हनुमानजी के वचन सुनकर हर्ष की लहर छा गई।

403 मनि एवेन्यु बैक ऑफ इण्डिया के सामने वेद नगर सावेर रोड, उज्जैन म.प्र. 456010

आलेख

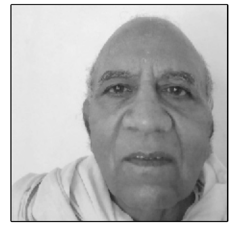

चंदन सिंह ठाकुर

गोस्वामी तुलसीदास का दार्शनिक अभिमत

अपनी मौलिक उद्भावनाओं के अतिरिक्त रामचरितमानस की रचना के पूर्व संस्कृत एवं अन्य भाषाओं में लिखे गये विपुल साहित्य में से तुलसी को जो लोकोपयोगी लगा उसे उन्होंने बिना संकोच किये स्वविवेकानुसार उत्साह पूर्वक ग्रहण किया चाहे कथा–प्रसंग हो, चाहे पात्रों के स्वभाव अथवा संवाद हो या नीति कथन हों। इसी प्रकार जो उन्हें अनुपयोगी लगा उसे वे छोड़ते गये। उन्होंने विनम्रतापूर्वक ऐसे चयन के लिये आत्मस्वीकृतियाँ भी की किन्तु इस मधु संचय में उन्होंने अभूतपूर्व श्रम किया। अपनी रघुनाथगाथा को श्रुति सम्मत रखते हुए उसे जन–जन तक पहुँचाने और लोकहितकारिणी सिद्ध करने के लिए भाव, भाषा, शैली, विचार आदि हर स्तर पर इसे बोधगम्य भी बनाया। इसी परिपेक्ष्य में उनके दार्शनिक विचार भी सहजता से अभिव्यक्ति पा सके। लोकमत और वेदमत से समन्वित उनकी रघुनाथ गाथा का वर्तमान स्वरूप उनके लोक मंगलवाद का प्रतिफल है। यह स्वरूप वस्तुतः तुलसी के दार्शनिक अभिमत का ही व्यावहारिक जीवन में प्रयोग है। आइए, पहले गोस्वामी तुलसीदास के दार्शनिक विचारों को समझें जो उन्होंने ब्रह्म, जीव, जगत, माया आदि से संबंधित प्रचलित भ्रान्तियों को निर्मूल करते हुए रघुनाथगाथा के प्रसंगों में कथा–प्रवाह को अक्षुण्ण रखते हुए व्यक्त किये हैं और अविरल भक्ति की स्थापना की हैं।

मुख्यतया रामचरितमानस 'विनय पत्रिका' और 'कवितावली' (उत्तर) में प्राप्त दर्शन को भली प्रकार समझने के उपरान्त तुलसी के दार्शनिक दृष्टिकोण को किसी एक दार्शनिक मत में स्थिर करना सहज नहीं है। भारतीय संस्कृति का मूल पक्ष अध्यात्म ही है, जिसमें एक में अनेक की अनुभूति हमारे चिन्तन और अस्तित्व की जड़ है – इसे तुलसी ने जाना और सीयाराममय जग को जानकर प्रणाम किया। यहां तक कि 'जड़ चेतन जग जीव जत सकल राम मय जानि' अर्थात् समस्त जड़

चेतन को राममय कर दिया। यदि जग राममय है तो मिथ्या कैसे ? ब्रह्म और जीव दोनों की पृथक सत्ताएँ है तो दोनों के बीच भेद क्या असत्य (मुधा) है ? माया का स्वतंत्र सक्रिय अस्तित्व यदि है तो क्या है? माया का जीवन से अथवा आत्मा से क्या और कैसा संबंध है? क्या एकात्म होना मुक्ति है? क्या तत्वज्ञान के बिना अथवा क्या भक्ति के बिना जीव को विश्राम नहीं मिलता—ऐसी सहज जिज्ञासाओं के समाधान के लिए विचार किया जाना विषय की पूर्णता के लिए अपेक्षित है।

भारतीय षट्दर्शनों में वेदान्त अर्थात् उत्तर मीमांसा इन जिज्ञासाओं का सहजता पूर्वक समाधान करता है। ब्रह्मसूत्र के भाष्यकार आदि शंकराचार्य के मत में ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ भी सत् नहीं है। जीव और जगत् मिथ्या तथा भ्रमात्मक है। जीव और ब्रह्म में एकत्व है। राम चरितमानस के आरंभ में तुलसी इसी अद्वैत का प्रश्रय लेते जान पडते हैं – **यत्सत्वाद्मृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः** अर्थात् सम्पूर्ण दृश्यमान जगत मायावश है और रज्जु में सर्प के भ्रम का सा आभासित हो रहा है। आगे तुलसी यह भी स्पष्ट करते हैं कि जिस ब्रह्म को जाने बिना झूठा भी सच्चा जान पड़ता है जैसे रस्सी को सांप समझ जाते हैं ब्रह्म को जान संसार वैसे ही लुप्त हो जाता है जैसे जागने पर स्वप्न। आचार्य शंकर के मायावाद में भी निर्गुण ब्रह्म माया से आवृत्त होकर ही सगुण स्वरूप लेता है। माया मिथ्या है पर उसे उन्होंने एक शक्ति के रूप में स्वीकार किया है। तुलसी के मत में वही शक्ति ब्रह्म की योगमाया सीता है। **'आदिशक्ति जेहि जग उपजाया। सोउ अवतरिहि मोरि यह माया।'** निर्गुण ब्रह्म अपनी शक्ति से ही सगुण बन जाता है अतः तुलसी के मतानुसार सगुण और निर्गुण दोनों रूप सत्य हैं। **'फूले कमल सोह सर कैसा। निर्गुण रूप सगुन भए जैसा।।'**

आचार्य शंकर प्रतिपादित वेदान्त दर्शन से हिन्दी के अनेक संत और कवि प्रभावित रहे हैं। चारों वैष्णव वेदान्ती—रामानुज, वल्लभ निम्बार्क और माधव ने भी संतों को प्रभावित किया है। रामानुजाचार्य विशिष्टाद्वैत के मूल प्रवर्तक थे। उनके मत में चित् और अचित् दो सत्ताएँ हैं। चित् सत्ता के द्वारा परामात्मा स्वयं जीवात्मा का और अचित् सत्ता द्वारा जगत का सृजन करता हैं। ब्रह्मा ही स्वयं को जगत् के रूप में प्रकट करता है और विविध लीलाओं का विस्तार करता है। प्रकारान्तर से जीव और ब्रह्म एक ही है। **'यद्यपि सेवक-सेव्य बिनु भव न तरिय उरगारि'** के व्यावहारिक पक्ष के विचार से तुलसी हमारी विनम्र सम्मति में पक्के विशिष्टाद्वैतवादी ठहरते हैं किन्तु सैद्धान्तिक रूप में वे रामानुज के मत से सहमत नहीं होकर शंकर मत और रामानुज दोनों से भिन्न पद्धति में लिखते हैं कि जगत ब्रह्म की शक्ति माया से उत्पन्न है। माया जो है ही नहीं, वहीं संसार को उत्पन्न कैसे कर रही है? इन्द्रजाल (जादू) से उत्पन्न वस्तुएं क्या यथार्थ (सच) हो सकती है ? वैसे ही संसार सच नहीं है —**'रजत सीप महुँ भास जिमि जथा भानु कर बारि। जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ भ्रम न सकइ कोउ टारि''** अथवा **'सपने होइ भिखारि नृपु, रंकु नाकपति होइ। जागे लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंच जियँ जोइ।''** इन उद्धरणों में तुलसी मत, शांकरमत के निकट और अनुकूल ठहरता है। वे जग को नभवाटिका के समान असत्य और धुएँ के

महलों का सा प्रतिक्षण परिवर्तनशील पदार्थ कह रहे है।

द्वैतवाद अद्वैत के विरुद्ध सिद्धान्त है। इनके विरोध को समाप्त करने और दोनों वादों में समन्वय के लिए शुद्धाद्वैतवाद, विशिष्टद्वैतवाद और द्वैत। द्वैतवाद सामने आए। यद्यपि, श्रुति, स्मृति और ब्रह्मसूत्र के प्रमाणों को मानने के कारण द्वैतवाद भी वेदान्त ही है। द्वैतमत के अनुसर चिद् और अचिद् दोनों अविनाशी सत्ताएँ है। चिद् सत्ता में जीवन, परमात्मा–दोनों अज, अमर और ज्ञान स्वरूप हैं तथा जीव ईश्वर और प्रकृति ये तीनों सत्ताएँ मानी गई हैं। गोस्वामी तुलसीदास वैष्णव के रामानय संप्रदाय के भक्त थे जिसमें मूल सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत ही है किन्तु रामानंद के आराध्य लक्ष्मीनारायण नहीं अपितु राम–सीता हैं। स्वयं रामानंद ने भी राम को सगुण–निर्गुण दोनों ही माना है। वे जीव का नानात्व तथा ब्रह्म से उसकी भिन्नता भी मानते हैं। तुलसीदास यह भी मानते हैं। जीव जगत् और माया के प्रतिपादन की पद्धति में तुलसी शंकाराचार्य की पद्धति अपनाते हैं लेकिन यहां भी वे भक्ति और मायवाद में शंकराचार्य से असहमत होते हुए इन दोनों में अविरोध स्थापित कर देते हैं। यह तुलसी का अभूतपूर्व समन्वय और उनका अविष्मरणीय प्रदेय है।

आदि शंकराचार्य सगुण ब्रह्म को मायोपधि –जन्य मानते हैं पर तुलसी का निर्गुण ब्रह्म'भगत प्रेमवश' सगुण हो जाता है जिसका साकार रूप शुद्ध ब्रह्ममय ही है –'**चिदानंद मय देह तुम्हारी। विगत विकार जान अधिकारी**।' अवतारवादी धारणा में तुलसी रामानुजाचार्य के मत के अनुयायी हैं। वे शंकराचार्य के मत के अनुसार यह भी कह सकते हैं कि जीव और ब्रह्म मे भेद मायाकृत है तत्वतः भेद नहीं हैं पर वे आत्म विश्वास पूर्वक यह स्थापित करते हैं कि ईश्वर का अंश होने के कारण जीव भी अपने अंशी की तरह चेतन, अमल सहज सुखराशि है। उसकी शक्ति और सीमाएँ ईश्वर से स्पष्ट रूप से प्रथक हैं –''**माया ईश न आपु कहुँ जान कहिअ सो जीव**'' इसलिए तुलसी जीव को राम की भांति सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वान्तर्यामी नहीं मानते। उनके अनुसार – **मायावस्य जीव अभिमानी ईस, वस्य माया गुन खानी**।। **परवस जीव स्ववस भगवंता। जीव अनेक एक श्रीकंता**।'' से यही स्पष्ट है।

ब्रह्म और जीव का इस प्रकार अद्वैत –समर्थन करते हुए भी तुलसी जीव की मुक्ति की अवस्था में भी द्वैतवादी हैं। जटायु देह छोड़कर श्यामगात विशाल भुजचारी हरि रूप 'हो जाने के बाद भी अश्रुपूरित नेत्र होकर स्तुति करता है। इसका कारण है कवि का भक्ति को मुक्ति से भी उत्कृष्ट और सर्वोपरि मानना क्योंकि उनकी मान्यता है '**सोह न राम प्रेम बिनु ज्ञानू**'। राम भक्ति के द्वारा तो मुक्ति तो '**अनइच्छित और बरिआई**' आ ही जाती है इसलिए वे ब्रह्म के सीताराम रूप में मग्न रहना चाहते हैं और मुक्ति तथा भक्ति में अभिन्नत्व मानते हैं। मुक्ति का सुख ही भक्ति है '**इनहिं बिलोकत अति अनुरागा। बरबस ब्रह्म सुखहि मन त्यागा**।' तुलसी के सगुणोपासक भक्त मोक्ष स्वीकार नहीं करते इसलिये राम उन्हें अविरल भक्ति प्रदान करते रहते हैं। तुलसीदास कवितावली में स्पष्ट स्वीकार करते हैं कि वे राम के हैं और राम के ही अंदर रहते हैं........**हम हैं**

तुम्हरे, तुम्ह में, सकु नाही। उत्तर पद 94।

जैसे रस्सी को न पहचान पाने पर उसमें सर्प का भ्रम होता है –यह भ्रम उसी को होता है जो सर्प को भी जानता है। झूठ, मृषा, मिथ्या, असत्य वस्तुतः विपरीत ज्ञान या अयथार्थ ज्ञान है। सत्य यथार्थ है और झूठ क्षणिक परिवर्तनशील अशाश्वत व अस्थिर और सत्य के विपरीत ज्ञान है। जगत कारण रूप से सत्य है पर कार्य रूप से वह मिथ्या है। जैसे रस्सी वास्तव में रस्सी है वैसे ही संसार भी है पर तुलसी यहाँ आग्रह करते हैं कि इसे संसार रूप में पहचान कर राम रूप में इसे ही यथार्थ अर्थात सच माना जा सकता है। तब इसका 'मिथ्यात्व या नानात्व' गायब हो जायेगा। 'सियाराम मय सब जग जानी' 'निज प्रभुमय देखहि जगत' और 'मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत' में तुलसी का यही अभिप्रेत आशय निहित है। यह सनातन धर्मी 'वसुधैवकुटुम्बकम्' है।

ब्रह्म सदा मायिक गुणों से रहित होता है। एक अग्नि काष्ठ में व्याप्त है, अव्यक्त है, निर्गुण है। दूसरी अग्नि बाहर प्रज्जवलित है, व्यक्त है, सगुण है –यही दिव्यता ब्रह्म की है, जो सत् चित् और आनंद स्वरूप है। यह गुण नहीं, ब्रह्म का स्वरूप है, जो एक रस है। जो निराकर 'पुरुष, प्रसिद्ध प्रकाशनिधि' और 'परावर नाथ' हैं वे ही तुलसी के प्रकट रूप में 'रघुकुलमणि' राम हैं। ऐश्वर्य के इतने विशेषण देकर अन्त में तुलसी ने माधुर्यपरक एक विशेषण प्रस्तुत कर सगुण के साथ निर्गुण ब्रह्म का ऐक्य स्थापित कर दिया।

संक्षेप में तुलसी ने आदि शंकराचार्य के ब्रह्म को ही 'राम' के रूप में प्रस्थापित कर अर्थात 'ब्रह्म जिज्ञासा' को अपने पक्ष में अर्थात् 'राम जिज्ञासा' के रूप में प्रस्तुत करते हुए वेदान्त के जटिल और बौद्धिक –व्यायाम –साध्य सूत्र को जन–जन तक पहुँचा दिया और अपने आराध्य राम को जन –जन का 'राम' बना दिया।

गो. तुलसीदास का दर्शनिक अभिमतः शोध संदर्भ

1. रामचरितमानस – गो. तुलसीदास
2. विनय पत्रिका – ''———————''
3. कवितावली – ''———————''
4. ईशादि नौ उपनिषद् – शांकरभाष्यार्थ

50, यशवंत नगर, रायसेन मो. 9993158884

तुलसी ममता राम सों, समता सब संसार।
राग न रोष न दोष दुख, दास भए भव पाए।।

तुलसी दास जी कहते है कि, जिनकी श्री राम में ममता और सब संसार में समता है, जिनका किसी के प्रति राग, द्वेष, दोष और दुःख का भाव नहीं है श्री राम के ऐसे भक्त भव सागर से पार हो चुके हैं।

आलेख

डॉ. सुनील कुमार सारस्वत

राम नाम चिंतामनि सुंदर

महापुरुष कहते हैं –'तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुना।'

अर्थात् तृण की अपेक्षा भी दीन और वृक्ष के समान सहनशील बनकर भगवान की सेवा करनी चाहिए। जो कठिन है, तो उनके लिए जिनके हृदय में अभिमान भरा है।

यह संसार एक युद्ध भूमि है, ऐसा हम सदियों से सुनते आए हैं, परंतु वास्तव में यहां युद्ध किसके लिए है ? संसार में गलाकाट प्रतिस्पर्धा है, जो धन, पद, मान, बल, संचय एवं शक्ति संतुलन से जुड़ी है। इसमें सांसारिक वस्तुओं की लालसा नहीं है। इसमें साधना के अंतिम चरण तक अहंकार और श्रेष्ठता का बोध नहीं छूट पाता। श्रेष्ठताबोध रखना अर्थात् प्रतिद्वंद्विता का भाव सदैव अस्थिर बनाए रखता है। जबकि जिस मनुष्य में विवेक और वैराग्य का ठहराव आ गया, तब वह इन अस्थाई एवं विचलित करने वाले पहलुओं के पीछे नहीं भगेगा।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है –

हेतु रहित जग जुग उपकारी। तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी।।
स्वारथ मीत सकल जगमाहीं। सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं।।

मानस 7/47/5–6

अर्थात् महापुरुषों का और भगवान का कोई कर्तव्य और प्रयोजन न रहते हुए भी लोगों को कुमार्ग से बचाने के लिए एवं नीति, धर्म और ईश्वर भक्ति रूप सन्मार्ग में प्रवृत करने के लिए केवल लोकहितार्थ सब क्रियाएँ हुआ करती हैं।

अविवेकीजनों की भोगों में आसक्ति होती है, जबकि विवेकी मनुष्य के लिए स्वर्गलोक भी तुच्छ है। सब प्रकार के फलों के भोग में अनासक्ति होना वैराग्य है। प्रारब्ध के अनुसार जो भी दुख प्राप्त हो उसे समभाव से सहन करना ही तितिक्षा है। विवेक, वैराग्य और तितिक्षा से संपन्न मनुष्य को संसार युद्ध में किसी भी प्रकार से पराजित नहीं किया जा सकता। विवेक, वैराग्य एवं तितिक्षा के ताप के शोधन से जो

स्फटिक–मणि के समान पूरी तरह शुद्ध एवं पारदर्शी हो गया, वह संसार के हर युद्ध से विलग है। अतः उसका कोई प्रतिद्वंदी नहीं। विवेक, वैराग्य, तितिक्षा प्राप्त मनुष्य संसार में रहकर देह के नियमों का पालन करता हुआ दिखता है और वह आत्मशुद्ध है। महाभारत में रंतिदेव जी ने कहा –

ना त्वहं कामयेद्र जयं न स्वर्गं नऽपुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणीनामार्तिनाशनम्।।

अर्थात् न मुझे राज्य चाहिए, न स्वर्ग, न मोक्ष। मैं केवल यही चाहता हूँ कि मैं दीन–दुखियों के दुःखों को दूर करने योग्य बन सकूँ। जब यह भाव हमारे अन्दर दान करने की, भजन करने की इच्छा हो तो समझें कि श्री प्रभु की कृपा है। बिना कृपा के सत्कर्म जीव नहीं कर पाता है। भगवान की कृपा से यह पुण्य कर्म हुए हैं ऐसा मानने पर कर्म का अहंकार नहीं होगा। मनुष्य नाशवान जड़ वस्तुओं से इसलिए प्रेम करता है कि ये हमको सुखी करेंगे, पर उनसे सुख नहीं मिलता है। इस पतनोन्मुखता से मुक्ति का मात्र उपाय आत्मस्वरूप का बोध हो जाना है, जो श्रेष्ठकर है उसे आत्मसात् कर लेना है तथा जीवन के रहस्य से परिचित हो जाना है। इसलिए प्रभु से ही प्रेम करना चाहिए।

वास्तव में दो चीजों को संसार में हम पकड़े हुए हैं–एक तो भोगे हुए को। जो भोगा है उसका रस मन में रचा बसा है। उसे बार–बार भोगने का मन करता है। भोगा हुआ अर्थात् अतीत और एक बिना भोगे सुख की आकांक्षा अर्थात् भविष्य, कामना, वासना, डिजायर। यही दो पाट हैं जीवन के जिनके बीच मनुष्य पिसता रहता है –

चलती चाकी देखकर दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।

अतीत को भोग कर देखा। उसके रस को देख लिया। शायद निरर्थक था। इसीलिए अब भविष्य में नए भोगों की आकांक्षा को हम पालते हैं – यहीं है कामना, काम वासना, आशा जो भोगा था वह है भूत, उसमें रस बना हुआ है। जो भोगा था उससे तृप्ति अभी तक नहीं हुई है। अभी भी उसमें रस बना हुआ है। भविष्य आकांक्षा है उन भोगों को भोगते रहने की, और बिना भोगे भोगों को भोगन की। इसी दो पाट में मनुष्य का सारा जीवन फंसा हुआ है।

योग वशिष्ठ में कहा गया है कि समस्त दुःखों का एकमात्र कारण अज्ञान है–'आयधो व्याधश्चैव द्वयदुःखस्यकारणम्, तन्निवृत्तिः सुखं विद्यात, तत्क्षयो मोक्ष उच्यतेः।' आधि और व्याधि अर्थात् मानसिक और शारीरिक–ये ही दो प्रकार के दुःख संसार में हैं। इनकी निवृत्ति विद्या अर्थात् ज्ञान के द्वारा ही होता है। दुःख –निवृत्ति का नाम ही मोक्ष है। दुःखों का अत्यन्त अभाव ही आनंद है और यही मोक्ष है। मोक्ष का आनंद स्थाई, स्थिर, अक्षय, समानहेतुक तथा निःषेध हुआ करता है। वह न कहीं से आता है और न कहीं जाता है, न किसी के कारण से उत्पन्न होता है और न किसी कारण से नष्ट होता है। वह आत्मभूत और अहेतुक है। वह संपूर्ण रूप में मिलता है, संपूर्ण रूप में अनुभूत होता है और संपूर्ण रूप में ही सदा सर्वदा रहता है। (ईश्वर कौन है, कहां है, कैसा है –आचार्य श्रीराम शर्मा, 10:8)।

तुलसी कहते हैं कि सच्चा आनंद तो श्रीराम के चरणों में ही है। वे ही साक्षात् नारायण हैं। आज संसार में सभी दुखी हैं, उसका मूल कारण है, लोग कर्म नहीं करते। कर्म करेंगे तभी अनुकूल फल मिलेगा, लोग प्रश्न करते हैं कि कर्म बड़ा होता है या भाग्य बड़ा होता है? ये आज के जनमानस के अन्तर्गत एक आम प्रश्न बन गया

है। ये बात बिल्कुल स्पष्ट समझ लें कि भाग्य नाम की कोई चीज अलग से नहीं होती जीव का जन्म कर्म से होता है, मृत्यु भी कर्म से होती है, सुख और दुःख जो कुछ भी मिलता है, केवल कर्म से मिलता है।

कर्मणा जायते जन्तुः कर्मणैव विलीयते।
सुखं-दुखं भयं क्षेमं कर्मणैवाभिपद्यते।।

यदि ईश्वर नाम की कोई चीज है, तो वो भी फल उसी को देती है जो कर्म करता है, जो कर्म नहीं करता उसको फल ईश्वर कभी नहीं देता। शास्त्र कहते हैं, जैसा कर्म करोगे वैसा फल मिलेगा, माना कि हमारे पास बहुत कुछ है लेकिन यदि कर्म आप शास्त्रों के विरुद्ध कर रहे है, तो यह समझ लेना कि अब जो उपभोग कर रहे हैं वह पूर्व जन्म का कर्म फल है, लेकिन इस जन्म का कर्म फल आगे मिलेगा।

अस्ति चेदीश्वरः कश्चित् फलरूप्यन्त कर्मणाम्।
कर्तारं भजते सोऽपि न ह्यकर्तुः प्रभुहि सः।।

आज हमने बुरा कर्म किया तो कल बुरा भाग्य बनेगा, आज अच्छा कर्म किया तो कल अच्छा भाग्य बनेगा। 'बोया पेड़ बबूल का तो आम कहां से होय'। इसलिये कर्म प्रधान है। भाग्य नाम की चीज अलग से नहीं होती। जो व्यक्ति ये कहता है कि भाग्य में होगा तो मिलेगा, ये तो आलसियों का लक्षण है। व्यक्ति को उद्यम करना चाहिये, कर्म करना चाहिये।

नाभुक्तं क्षीयते कर्म जन्मकोटिशतैरपि।
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।।

जो भाग्य में है वह चीज मिलेगी, इसके लिए आजमा कर देखें – आप बिना कुछ खाये–पीये अपने कमरे का दरवाजा बंद करके ताला लगाकर चाबी खिड़की से नीचे फेंक दीजिये। ए.सी. चलाकर डबल बेड पर बढिया मखमल का तकिया लगाकर झीनी चदरिया ओढकर सो जाइये। अब सोते समय कहना, मेरे भाग्य में होगा तो रामजी मुझे भोजन यहीं दे जायेंगे और सो जाईये।

देखना है कि, रामजी भोजन लाते हैं या नहीं, भूख के मारे प्राण भले ही निकल जाये, लेकिन रामजी भोजन कभी नहीं लेकर आयेंगे, बल्कि रामजी तो नाराज हो जायेंगे। इस नासमझ को देखो, मैंनें शरीर दिया, बुद्धि दी है, हाथ–पैर दिये है, विचार दिये हैं, शक्ति दी है, कर्म तो करता नहीं मेरे ऊपर आश्रित है। परमात्मा भी सहायता उसी की करते हैं, जो अपनी सहायता स्वयं करना चाहते हैं, जो मनुष्य स्वयं अपनी सहायता नहीं करते, उसकी सहायता परमात्मा भी नहीं करते।

कर्म तो करते हैं, परन्तु परमात्मा का चिन्तन भी करना चाहिये, हमारे शास्त्र कहते हैं –परमात्मा के अपने वचन हैं– 'तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युद्ध च।'

प्रत्येक काल में मेरा स्मरण भी करो और कर्म भी करो। केवल कर्म करने से और भगवान् को भूल जाने से कर्म सफल नहीं होता। केवल भगवान् की माला लेकर बैठ जाना और कर्म नहीं करना तो भी कर्म सफल नहीं होगा। इसलिये दोनों ही कार्य होने आवश्यक हैं।

एक खुशी की बात है–विगत आठ–दस वर्षों से हिन्दू धर्म में बड़ा भारी रूपांतरण हुआ है खुशी की बात है कि इस परिवर्तन में युवा लोग जैसे एक दशक पहले बिगड़ने में आगे थे, वैसे युवावर्ग आजकल सत्संग में भी अग्रसर हो रहा है। जिन पांडालों या मैदानों में कथा चलती है वहाँ सत्तर प्रतिशत श्रोता युवावर्ग होता है। और बड़े प्रेम से कथा सुनते है। देखकर प्रसन्नता होती है मन में,

सत्संग के प्रति रुझान जब बढ़ेगा, जीवन में आमूलचूल परिवर्तन आयेगा। एक बात यह है कि दुनियाँ अगर नरक है तो केवल उनके लिये जो भगवान् को भूले हुये हैं यह दुनियाँ स्वर्ग अवश्य है मगर वो भी केवल उनके लिए जिनका प्रभु से प्रेम रूपी सम्बन्ध बन चुका है। जिसे प्रभु की सत्ता पर जितना कम विश्वास होगा वह उतना ही दुःखी होगा परन्तु दुःख तब होता है जब मालूम होता है कि आज के युवा ऐसे स्थानों पर पर्यटन के लिए जा रहे हैं। आज का युवा दिशाहीन मालूम पड़ता है। बहुत ही चिंता की बात है।

जीवन में सुख दुख का क्रम बराबर चलता है। समय एक समान नहीं रहता है। प्रकृति परिवर्तशील है, तो जीवन भी बदलेगा। इसलिए हार और जीत को स्थिर मन से स्वीकार करना चाहिए। हार से कभी निराश न हो, जीत से उद्वेलित न हो। हार में अति दुखी होना या जीत पर अति प्रसन्न होना दोनों उचित नहीं, क्योंकि यह स्थाई नहीं, बल्कि परिवर्तनीय स्थिति है। संसार का नियम है कि मनुष्य का इन दोनों स्थितियों से सामना होगा। रोना–हसंना जीवन के अनुभव हैं, जो पाठ सिखाते हैं। दोनों में समान भाव की बात महात्माओं ने भी कही है। हारना–जीतना कर्मयोग के क्षेपक हैं, प्रारब्ध के पड़ाव हैं। किसी भी वीर–धीर मानव को भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए। प्रत्येक दशा में हार–जीत को खेल भावना की दृष्टि से ही देखना चाहिए। हार तो जीत की अनुचरी है। वास्तव में हार को हार नहीं, जीत का बीच मानना चाहिए। हार को नकारात्मक संज्ञा न मानना ही वास्तविक विजेता की पहचान है। इसलिए मनुष्य को सदैव हार–जीत की मानसिकता से मुक्त रहना चाहिए।

जीवन में कठिन कुछ नहीं होता है। जीवन में सिर्फ परिस्थितियां होती है। फिर चाहे उसका अनुभव एक कठिनाई के रूप में करें या आनंद के रूप में। यह चुनने का अधिकार अपना है। अगर हम समझदार हैं तो हर परिस्थिति को एक आनंदमय प्रक्रिया में बदल देंगे। अगर हम समझदार नहीं हैं, तो अपने लिए हर परिस्थिति को कठिनाई बना लेंगे। यदि हम जानते हैं कि अपने दिमाग में चल रही बेतुकी बातों को कैसे महत्व न दें, यदि हम अपने दिमाग में चल रही मनोवैज्ञानिक बकवास में उलझे नहीं, तो निश्चित रूप से जल्दी समझदार बन जायेंगे।

हमारा सुख इस बात पर निर्भर नहीं करता कि हमारे पास कितनी सम्पत्ति है, अपितु इस बात पर निर्भर करता है कि हमारे पास कितनी सन्मति है। स्वर्ग का अर्थ वह स्थान नही जहाँ सब सुख हों अपितु वह स्थान है जहाँ सभी खुश रहते हों। भक्ति हमें सम्पत्ति तो नहीं देती पर प्रसन्नता जरूर देती है। प्रसन्नता से बढ़कर कोई स्वर्ग नहीं और निराशा से बढ़कर दूसरा कोई नरक भी नहीं है। इसलिये भगवान् भक्ति के साथ पुरुषार्थ, इस मानव जीवन के साथ भगवत् प्राप्ति की गारंटी है।

गोस्वामी तुलसीदास भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि तथा भारतीय आस्था के प्रतीक है। उनके राम पुरुषोत्तम हैं वे पूर्ण मानव हैं। मानव के सुख–दुख, राग–विराग की सम्पूर्ण भावनाएँ उनमें हैं। इसीलिए राम के रूप में युग ने जनता का पूर्ण रूप देखा। उनमें अपने आदर्शों का पूर्ण प्रतिबिम्ब देखकर लोक ने उन्हें अपना लिया। तुलसी स्वयं कहते हैं कि 'सोवै सुख तुलसी भरोसे एक राम के'।

'पद्माकर' जी की तो दृढ धारणा है कि 'ध्यायो राम रूप तब ध्याइबो रह्यों न कछु, गायो राम नाम तब गाइबो कहा रह्यों' (प्रबोध पचासा छंद संख्या 10)। रामनामा के संकीर्तन के बाद कुछ गाने के लिए शेष रह ही नहीं जाता है। ऐसे भगवान राम, जिनका 'नाम कामतरु काल कराला, सुमिरत समन सकल जगजाला' है, उनसे हम निरंतर यह प्रार्थना करते रहें–

श्रीरामगोविंदमुकुन्दकृष्ण,
श्रीनाथ विष्णो भगवन्नमस्ते।
प्रौढ़ारिषिड़नवर्ग महाभयेभ्यो,
मां त्राहि नारायण विष्णुमूर्ति।

अर्थात् हे राम ! आप ही गोविन्द, मुकुन्द, कृष्ण, श्रीनाथ, विष्णु तथा नारायण सभी कुछ हैं, आपको मैं नमस्कार करता हूं। आप काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ और मत्सर रूपी प्रबल शत्रुओं के भीषण भय से मेरी रक्षा करें।

अन्त में पूज्य पिता जी डॉ. गणेशदत्त सारस्वत के छंद का स्मरण करते हुए भगवान राम की भक्ति तथा अक्षरद्वय के प्रति अनुरक्ति जन–जन को 'मानस' के माध्यम से सुलभ कराने वाले गोस्वामी तुलसीदास जी के चरणों में इस विनत प्रणति के साथ अपनी वाणी को विराम इस आशा से देता हूं कि प्रभु श्रीराम सद्बुद्धि दें और सबका कल्याण करें –

श्रृंग-अनीति के पंख को काटते,
वज्र -प्रहार बने तुलसी।
पीड़िता संसृति पाप-त्रिताप के,
है उपचार बने तुलसी।।
आत्म की खोज समाधि में लीन,
हो ब्रह्म-विचार बने तुलसी।
मालिका वर्ण के नाद मकार में,
आप रकार बने तुलसी।।

'सारस्वत' सदन, सिविल लाइन्स, सीतापुर.261001 (उ.प्र.)

आंचलिक समाचार

रामचरितमानस मानस के मासपारायण पाठ का हुआ विश्राम

तुलसी मानस मंडल द्वारा आयोजित मास पारायण का 10 वां वर्ष

बाग–पावन श्रावण माह में बायपास रोड़ स्थित नागेश्वर मंदिर पर एक माह से चल रहे रामचरित मानस पाठ के मास पारायण का समापन किया गया। तुलसी मानस मंडल 'सर्वे भवन्तु सुखिन' एवं सर्व मंगल कामना के उद्देश्य से विगत दस वर्षों से श्रावण माह में संगीतमय मास पारायण करता आ रहा है। मंडल के समस्त सदस्यों ने मानस पाठ में उपस्थित रहकर अपना श्रीराम एवं शिव आराधना का आनंद लिया। मंडल के महेंद्र सिंह ठाकुर, राजेन्द्र सिंह झाला, उमेश मानधन्या, राधेश्याम प्रजापति, हरी वर्मा, धर्मेन्द्र सेन, सुरेश चंद्र गुप्ता, दिनेश नामदेव, जयकिशन शिंदे, देवेंद्र शर्मा, प्रदीप नामदेव जगदीश चोयल, धर्मेंद्र सोलंकी आदि विशेष सहयोग रहा। तुलसी मानस मंडल तथा मंदिर के पुजारी देवेंद्र शर्मा ने मानस पाठ के समापन पर राम दरबार की आरती कर कार्य निर्विघ्न संपन्न होने पर प्रभु का आभार माना।

प्रस्तुति राजेन्द्र सिंह झाला

आलेख

संदीप कुमार परिहार

अहल्या उद्धार

अहल्या अथवा अहिल्या रामचरितमानस में वर्णित एक स्त्री पात्र हैं, जो गौतम ऋषि की पत्नी थीं। ब्रह्मपुराण एवं अन्य पुराणों में इनकी कथा छिटपुट रूप से कई जगह प्राप्त होती है और रामायण तथा बाद की रामकथाओं में विस्तार से इनकी कथा वर्णित है। अहिल्या का नाम सृष्टि की पवित्रतम पाँच कन्याओं, पंचकन्याओं में से है और इन्हें प्रातः स्मरणीय माना जाता है।

अहल्या के बारे में एक प्रसिद्ध श्लोक है–

अहल्या द्रौपदी कुन्ती तारा मन्दोदरी तथा
पंचकन्या स्मेरनित्यं महापातक नाशिनी।

अर्थ– अहल्या, द्रौपदी, कुन्ति, तारा और मंदोदरी इनका प्रतिदिन स्मरण करना चाहिए, ये महापापों का नाश करने वाली हैं। हिन्दू पत्नियाँ, पंचकन्याओं का स्मरण प्रातःकालीन प्रार्थना में करती हैं, इन्हें पाँच कुमारियाँ माना जाता है। ये पाँचों पवित्र महासती हैं एवं शक्तियों की स्वामिनी भी हैं। अहल्या को इन पाँचों में प्रमुख इसलिए भी माना जाता है क्योंकि ये कालानुक्रम में भी सबसे पहले हैं।

देवी भागवत पुराण में देवी अहल्या को एक प्रकार से उन द्वितीय कोटि की देवियों में स्थान दिया गया है, जिन देवियों को शुभ, यशस्विनी और प्रशंसनीय माना गया है। इनमें तारा और मंदोदरी के अलावा पंचसतियों में से अरुन्धती और दमयन्ती इत्यादि भी शामिल की गयी हैं। वह स्थान जहाँ अहल्या ने अपने शाप की अवधि पूर्ण की और जहाँ शाप मुक्त हुईं, ग्रन्थों में अहल्या–तीर्थ के नाम से उल्लेखित और पवित्र स्थान के रूप में प्रतिष्ठित है।

अहल्या शब्द दो भागों में विभाजित किया जा सकता है : अ (एक निषेधवाचक उपसर्ग) और धातु रूप हल्या, जिसका संस्कृत अर्थ हल, हल जोतने अथवा विरूपता से सम्बंधित है।

रामायण के उत्तर काण्ड में ब्रह्मा द्वारा इसका अर्थ बिना किसी असुन्दरता के बताया गया है, जहाँ ब्रह्मा इन्द्र को यह बता रहे हैं कि किस प्रकार सृष्टि की सुन्दरतम रचनाओं से तत्त्व लेकर उन्होंने अहल्या के अंगों में उनका समावेश करके अहल्या की रचना की। ज्ञानमंडल, वाराणसी से प्रकाशित आधुनिक कोश इसी अर्थ को लेकर वर्णित है: "अहल्या– हल का अर्थ है कुरूप, अतः कुरूपता न होने के कारण ब्रह्मा ने इन्हें अहल्या नाम दिया।"

संस्कृत शब्दकोश अहल्या का अर्थ ऐसी भूमि जिसे जोता न गया हो लिखते हैं। बाद में युग अनुसार पुरुष समागम से जोड़कर देखते हुये, अहल्या को कुमारी अथवा अक्षता के रूप में निरूपित किया गया है। यह उस परम्परा के अनुकूल पड़ता है जिसमें यह माना गया है कि अहल्या अनेकानेक प्रकार से इन्द्र की लिप्सा से मुक्त और उनकी पहुँच से बाहर रही।

प्राचीन कथा के अनुसार यह गौतम ऋषि की पत्नी और ब्रह्माजी की मानसपुत्री थी। ब्रह्मा ने अहल्या को सबसे सुंदर स्त्री बनाया। सभी देवता उनसे विवाह करना चाहते थे। ब्रह्मा ने एक शर्त रखी जो सबसे पहले त्रिलोक का भ्रमण कर आएगा वही अहल्या का वरण करेगा। इंद्र अपनी सभी चमत्कारी शक्ति द्वारा सबसे पहले त्रिलोक का भ्रमण कर आये। लेकिन तभी नारद ने ब्रह्माजी को बताया कि ऋषि गौतम ने यह कार्य से पहले किया है। नारदजी ने ब्रह्माजी को बताया कि अपने दैनिक पूजा क्रम में ऋषि गौतम ने गाय माता का परिक्रमा करते समय बछडे को जन्म दिया। वेदानुसार इस अवस्था में गाय की परिक्रमा करना त्रिलोक परिक्रमा समान होता है। इस तरह माता अहल्या का विवाह अत्रि ऋषि के पुत्र ऋषि गौतम से हुआ।

इंद्र की गलती की वजह से ऋषि गौतम ने माता अहल्या को शाप देकर पत्थर बना दिया। कालांतर में प्रभु श्रीराम के चरणस्पर्श द्वारा वे पुनः स्त्री बनी।

विश्वामित्र जी राम और लक्ष्मण को दशरथ जी से मांग कर ले आये और ताड़का, मारीच और सुबाहु का भगवान ने वध कर दिया। अब धनुष यज्ञ की ओर राम लक्ष्मण और विश्वामित्र जी चले जा रहे है। मार्ग में एक सुनसान आश्रम आया है। भगवान राम की नज़र उस पर पड़ी भगवान राम जी पूछते हैं गुरुदेव..! ये किस प्रकार का आश्रम है। यहाँ पर लगता हैं पहले कोई रहता था पर अब न कोई प्राणी हैं न कोई जीव हैं। एकदम वीरान है ये आश्रम और तो और यहाँ पर कोई कोई पशु–पक्षी, जीव–जंतु भी नहीं दिखाई देता हैं।

आश्रम एक दीख मग माहीं।
खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं।।
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी।
सकल कथा मुनि कहा बिसेषी।।

तब विश्वामित्र जी कहते हैं राम! तुम तो अंतर्यामी हो सब जानते हो। जहाँ पर किसी की नजर आज तक नही पड़ी वहां पर तुम्हारी कैसे पड़ गई ? भगवान राम मन में मुस्कुरा कर कहते हैं गुरुदेव, जहाँ पर कोई नही पहुंच सकता मैं तो वहां भी कृपा करता हूँ। मैं सब पर दया करता हुँ। फिर विश्वामित्र जी ने पूरी कथा राम जी को बताई।

गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर।

यह कथा अलग–अलग ग्रंथो में अलग–अलग तरह से वर्णित है। लेकिन सबका मूल एक ही है।

भगवान के चरणों की रज (धूल) से इंसान तो क्या पत्थर में भी जान आ जाती है। और भगवान सब पर अपनी कृपा करते ही है।

ब्रह्मा जी ने अपनी मानस पुत्री अहिल्या की रचना थी। इनको ये वर था की ये हमेशा 16 साल की रहेंगी। जिस कारण इन्द्रादि देवता के मन में अहिल्या को पाने की कामना मन में जाग गई।

अहल्या बहुत सुन्दर थी जिस पर इंद्र आसक्त था। जब इंद्र को यह पता चला कि उसकी अहिल्या गौतम ऋषि के पास है तो वह चन्द्रमा के साथ गौतम ऋषि के आश्रम में आया। वहां पर इंद्र मुर्गा बना और आधी रात को ही बांग दे दी। चन्द्रमा को द्वारपाल बनाया कि अगर गौतम लौटे तो वह इन्द्र को सूचित कर दे। और इंद्र ने गौतम का छद्मवेश धारण कर के अहिल्या के साथ छल किया। अहिल्या उन्हें ऋषि गौतम ही समझ रही थी, और अपना सर्वस्व दे दिया।

उधर गौतम ऋषि ने जब मुर्गे कि आवाज़ सुनी तो सोचा कि ब्रह्म मुहूर्त का समय हो गया है और गंगा नदी पर स्नान करने पहुंचे। और उन्होंने अपना कमंडल भरने के लिए उसे नदी में डाला, तो माता गंगा बोलीं, "अरे भाई! तुम इस समय यहाँ क्या कर रहे हो?""माता गंगा! में यहाँ प्रतिदिन सुबह को स्नान के लिए आया करता हूँ। लेकिन आप ऐसा प्रश्न क्यों पूछ रही हो?""गौतम! अभी तो अर्धरात्रि ही है। अपने घर वापस जाओ क्योंकि राजा इंद्र तुम्हारी पत्नी के साथ छल कर रहा है।"

अब गौतम ऋषि जल्दी–जल्दी अपने घर लौटे। जब ऋषिराज गौतम अपने आश्रम के समीप पहुंचे तो उन्होंने छत पर चन्द्रमा को बैठे देखा। उन्हें देखते ही चन्द्रमा भागने लगा, देवर्षि ने अपना मृगचर्म (गीले वस्त्र) उसपर फेंक कर मारा कहते हैं। इंद्र की इस योजना में चंद्रमा ने भी सहयोग किया था इसलिए गौतम ऋषि ने चंद्रमा को श्राप दिया कि चंद्र ने ब्रह्मा द्वारा निर्धारित नियमों का पालन नहीं किया और देवराज इंद्र को बुरे कर्म में सहयोग किया है इसलिए चंद्र को राहू का ग्रास बनना होगा। तभी से चंद्रमा को भी ग्रहण लगने लगा। इस प्रकार चन्द्रमा में दाग लग गया।

उनकी क्रोधित वाणी, इन्द्र के कानों पर भी पड़ी। वह भी निकल कर भागा.. और ऋषिराज गौतम से मिल उनसे प्रार्थना करने लगा। लेकिन, ऋषि ने उन्हें तुरंत नपुंसक हो जाने और सहस्रों भागों वाला हो जाने का श्राप दे दिया। इस श्राप का तुरंत प्रभाव हुआ और इंद्र के पूरे शरीर के अंग भंग हो गए। जब इंद्र वापस स्वर्ग पहुंचा तो अप्सरायें देवगन भी उसका उपहास उड़ाने लगे। तब इंद्र ने स्वर्ग छोड़ दिया और किसी अँधेरी और सुनसान गुफा में रहने लगा। वहीं उसने भगवान शिव की तपस्या की और तब जाकर ऋषि ने हजार साल बाद अपने कोप को थोड़ा कम किया और भग को आँखों में बदला। तब से इंद्र को हजार आँखों वाला कहते हैं।

इधर अहल्या की अस्त–व्यस्त अवस्था देख कर देवर्षि सब कुछ समझ ही चुके थे। अहल्या को भी पाषाण हो जाने का श्राप दे दिया। परन्तु उन्हें इस बात का भी अनुमान था कि अहल्या उतनी दोषी नहीं थी, लेकिन क्रोध में श्राप तो दे चुके थे। इसलिए इस श्राप से मुक्ति का भी उपाय बता दिया। दशरथ पुत्र राम के चरण रज जब भी उस पाषण पर पड़ेंगे वो मुक्त हो जायेगी।

विश्वामित्र जी कहते है.... हे राम! इन्होने

आपका बहुत इंतजार किया हैं। आप इनको अपने चरण कमल की रज (धूल) से पवित्र करो। **चरन कमल रज चाहती कृपा करहु रघुबीर**। फिर भगवान ने अपने चरणों का स्पर्श अहिल्या जी को दिया हैं। और जैसे ही स्पर्श हुआ हैं वहां पर तपोमूर्ति अहल्या जी प्रकट हो गई हैं।

परसत पद पावन सोक नसावन
प्रगट भई तपपुंज सही।

अहल्या जी दोनों हाथ जोड़कर राम जी के सामने खड़ी हैं। बस भगवान को एकटक निहार रही हैं। मुख से कुछ बोल नही पा रही है। अत्यन्त बड़भागिनी अहल्या प्रभु के चरणों से लिपट गई और उसके दोनों नेत्रों से जल (प्रेम और आनंद के आँसुओं) की धारा बहने लगी। अब अहल्या जी भगवान की स्तुति प्रारम्भ करती हैं– हे ज्ञान से जानने योग्य श्री रघुनाथ जी! आपकी जय हो। मैं एक अपवित्र स्त्री हूँ लेकिन आप जगत को पवित्र करने वाले हो और भक्तों को सुख देने वाले हो। हे कमलनयन! मैं आपकी शरण आई हूँ, (मेरी) रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए।

मुनि (मेरे पति) ने मुझे शाप दिया तो अच्छा ही किया क्योंकि आज आपके दर्शन मुझे मिले हैं और आपको इन नेत्रों से जी भर के देखा। जिस रूप को भगवान शंकर देखकर आनंद प्राप्त करते हैं। मैं बुद्धि की बड़ी भोली हूँ, मेरी एक विनती है। हे नाथ ! मैं और कोई वर नहीं माँगती, केवल यही चाहती हूँ कि मेरा मन रूपी भौंरा आपके चरण– कमल की रज के प्रेमरूपी रस का सदा पान करता रहे। **पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना।**

जिन चरणों से गंगा निकली हैं, भगवान शिव जिन चरणों को अपने शीश पर धारण करते हैं। जिन चरणकमलों को ब्रह्माजी पूजते हैं, कृपालु हरि (आप) ने उन्हीं को मेरे सिर पर रखा। हे हरि! आपकी अनंत कृपा हैं। इस प्रकार अहल्या जी ने सुंदर स्तुति गाई और भगवान के धाम को प्राप्त किया। नारी रूप में अहल्या को सम्मुख पाकर राम और लक्ष्मण ने श्रद्धापूर्वक उनके चरण स्पर्श किये। उससे उचित आदर सत्कार ग्रहण कर वे मुनिराज के साथ मिथिला पुरी को चल दिये। तुलसीदास जी कहते हैं भगवान तो बिना कारण ही दया करने वाले हैं। अरे मन! तू कपट–जंजाल छोड़कर उन्हीं का भजन कर।

अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल।
तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल।।

प्रभु जिन पर अहेतुक कृपा करते है वे सहज ही प्रभु की कृपा से भवसागर पार कर जाते है। जिस तरह प्रयागराज में गंगा पार के पूर्व भक्त केवट से नाव मांगी। केवट भगवान की कृपा जानता था इसलिए प्रभु ने प्रार्थना की कि प्रभु पहले आपके चरणों को पखार लूं तभी नाव में आपको चढ़ाऊंगा क्योंकि आपने तो अहिल्या जो प्रस्तर की थी उन्हें स्पर्श से नारी बना दिया। प्रभु केवट की अटपटी बात सुनकर मुसकराये और लक्ष्मणजी एवं जानकी जी की ओर देखकर मुसकराये। केवट की इस अनकही भक्ति को प्रभु सहज ही पहचान गये। इसी प्रकार अहल्या का उद्धार कर प्रभु ने संदेश दिया कि सहज भाव से जो स्मरण करें वही प्रभु का भक्त होगा और प्रभु उसका उद्धार करेगें।

सी–32, सूर्या आवासीय कालोनी, सी–सेक्टर, बीमाकुंज,
श्यामा प्रसाद मुखर्जी मार्ग कोलार भोपाल–02

श्रीराम कथा (संक्षिप्त कथात्मक)

समीक्षक : एस.एम. गोयल

श्रीराम कथा जनमानस के अंतःकरण में तक इस प्रकार रम चुकी है कि लोग गायन, वाचन, लेखन करते अघाते ही नहीं। महर्षि वाल्मीकि 'रामायण' व तुलसीकृत 'श्रीराम चरित मानस' इस कथा के दो व्यापक ग्रंथ है। प्रथम संस्कृत भाषा में और द्वितीय अवधी में है तथा इनके वाचन में पर्याप्त समय अपेक्षित है। संभवतया इसी बात को ध्यान में रख प्रस्तुत रचना की गई है ताकि जिज्ञासुजन कम समय में लगभग 5–6 घंटों में श्रीराम कथा पढ़ सकें। यह मूल कथा का संक्षिप्तीकरण है। इसमें तुलसी के 'मानस' की चौपाइयों व छंदों का खुलकर विपुल मात्रा में प्रयोग किया गया है। बीच–बीच में कथानक को भजनों के माध्यम से विस्तार किया गया है। इस पुस्तक में 'मानस' के सात काण्ड की कथा को नौ सोपानों में प्रस्तुत किया गया है।

पूज्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज ने 'मानस'को एक पुराण की संज्ञा दी है। इसकी तुलना श्रीम्भागवत पुराण से की जाती है। इस प्रस्तुति में प्रारंभ 'बालकाण्ड'के मनु–सतरूपा के तप व राम जन्म से किया है।

स्वायंभू मनु अरु सतरूपा।
जिन्ह तें भै नरसृष्टि अनूपा।।
दंपति धरम आचरन नीका।
अजहुँ गाव श्रुति जिन्ह कै लीका ।।
बरबस राज सुतहि तब दीन्हा।
नारि समेत गवन बन कीन्हा।।

और पुस्तक के अंत में श्रीरामचरित मानस का निम्न दोहे का उल्लेख किया गया है।

रघुबंस भूषन चरित यह नर
कहहिं सुनहिं जे गावहीं।
कलि मल मनोमल धोइ
बिनु श्रम राम धाम सिधावहीं।।

राम जन्म पर शिवशंकर जोगी रूप धारण कर अयोध्या जाते हैं। उस अवसर का सुन्दर भजन पुस्तक में दिया गया है।

आज अयोध्या की गलियों में,
घूमे जोगी मतवाला।
अलख निरंजन खड़ा पुकारे,
देखूँगा दशरथ लाला।।

इसी प्रकार के सुन्दर भजन प्रसंगानुकूल यत्र–तत्र पुस्तक में मिलेंगे। पुस्तक की एक प्रमुख विशेषता है इसमें दिए गए अनेक सुन्दर रंगीन चित्र। ये इतने आकर्षक हैं कि मन करता है निहारते ही रहें। आवरण पर तरकस में बाण, हाथ में धनुष लिए भगवान श्रीराम का सुन्दर चित्र।

अन्य चित्रों में है–झूला झूले कौशलचन्द्र, अयोध्या में हाल में विराजित रामलला, केवट की प्रेमाभक्ति, भरत को पादुका प्रदान, हनुमान द्वारा लंका दहन, रावण वध पर देवताओं द्वारा पुष्प वृष्टि, गोस्वामी तुलसीदास, श्रीराम दरवार, पुष्पक विमान में अयोध्या प्रयाण, चारों भाईयों का मिलन, राम राज्याभिषेक, सीताराम युगल सरकार, राम भक्त हनुमान सभी मनोहारी हैं। पुस्तक सुन्दर कागज पर मोटे टाइप में स्वच्छ व सुन्दर मुद्रण मुद्रित है। ऐसी प्रभावी गागर में सागर लघु श्रीराम कथा कृति हेतु संकलनकर्ता व प्रकाशक श्री हेमराज जी भराड़िया धन्यवाद के पात्र है।

नोटः रजिस्टर्ड डाक खर्च राशि रूपये 50/– मात्र प्रेषित करके पुस्तक प्राप्त की जा सकती है।

52/4 अग्रसेन नगर, अजमेर (राज)

प्रतिष्ठान समाचार

तुलसी मानस प्रतिष्ठान की प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति की बैठक दिनांक 8 नवंबर 2025 को मानस भवन के प्रशासकीय कक्ष में संपन्न हुई। इसमें कार्याध्यक्ष श्री रघुनंदन शर्मा द्वारा मुख्य रूप से प्रतिष्ठान के श्रीराम संग्रहालय हेतु माननीय मुख्यमंत्री जी की वित्तीय सहायता की घोषणा से संबंधित हुई प्रगति की जानकारी दी। उन्होंने अवगत कराया था कि मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग ने संग्रहालय निर्माण और विकास योजना को तैयार कराने का दायित्व पर्यटन विकास निगम को सौंप दिया है।

इस महत्वपूर्ण प्रायोजन में प्रतिष्ठान के भूभाग पर हुए अतिक्रमण के निवारण को लेकर संशय था। इस संबंध में प्रमुख समाचार पत्र दैनिक भास्कर में प्रकाशित दिनांक 23 अक्टूबर 2025 को प्रकाशित निम्न समाचार से स्थिति स्पष्ट हो जाती है– 'प्रशासन का कहना है कि शहर में छोटी–मोटी झुग्गियों और अवैध बसाहटों को चरणबद्ध तरीके से हटाया जाएगा, ताकि भोपाल को स्लम फ्री सिटी बनाने का लक्ष्य पूरा किया जा सके। यह कार्यवाही न केवल शहरी सौंन्दर्य सुधारने की दिशा में कदम है बल्कि झुग्गी बस्तियों में रहने वाले गरीब परिवारों को स्थायी और सुरक्षित आवास उपलब्ध कराने की कोशिश की है। एसडीएम ने बताया कि लंबे समय से काबिज रहवासियों को तीन स्थान बताऐ गये हैं जहां पर उनकी शिफ्टिंग की जा सकी है। रहवासी राशि देने पर सहमत नहीं थे। लेकिन क्योंकि ये जमीन मानस भवन प्रबंधन के पास की है, इसलिए प्रबंधन प्रति परिवार के लिए 2 लाख रुपए राशि देने के लिए सहमत हो गया है।''

उक्त प्रगति से प्रबन्धकार्यकारिणी समिति के सदस्यों को अवगत कराते हुए प्रतिष्ठान की जनकल्याणकारी कार्य एवं अपने उद्धेश्य के अनुरुप सांस्कृतिक उन्नयन की योजना के क्रियान्वयन पर हर्ष व्यक्त किया।

समाचार प्रभाग–सूचना प्रकोष्ठ, तुलसी मानस प्रतिष्ठान, मानस भवन

अन्नदाता
मध्यप्रदेश शासन
पराली न जलाएं, धरती और जीवन बचाएं
उपजाऊ शक्ति में वृद्धि | प्रदूषण से मुक्ति | अर्थव्यवस्था को गति
मिट्टी के रूप में मिले वरदान को नष्ट होने से बचाएं
डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
ये विकल्प अपनाएं
हार्वेस्टर के साथ स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम यंत्र का उपयोग
हैप्पी सीडर और सुपर सीडर का उपयोग कर सीधी बोनी
रीपर से कटाई के बाद जीरो टिलेज मशीन से सीधे बोनी
बेलर मशीन का उपयोग कर धान की पराली और मक्के के तने के बेल्स बनाएं
धान की पराली का प्लेट्स, ब्रिक्स और बायो फर्टिलाइज़र के निर्माण में उपयोग
JFarm Services
पराली हटाने के यंत्र
farmer.mpdage.org
पर खरीदें या
JFarm Services app
के जरिए
किराये से प्राप्त करें
प्राकृतिक खेती को अपनाएं
मिट्टी की सतह पर सूक्ष्म जीवों के बढ़ावे से मिट्टी की उर्वर शक्ति में वृद्धि
रासायनिक पदार्थों से मुक्त होने से कैंसर जैसी घातक बीमारियों से मुक्ति
प्राकृतिक खेती से उत्पादन में कोई कमी नहीं
मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी
आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2025
आइये, स्वस्थ मिट्टी, स्वच्छ पर्यावरण और स्वस्थ जीवन के लिए पराली न जलाने का प्रण लें....

D-19223/25

D-19223/25

स्वामी-तुलसी मानस प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश, प्रकाशक श्री रघुनंदन शर्मा और मुद्रक श्री राधिका प्रकाशन प्रा. लि., 26-ए, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ज़ोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल 462011 से मुद्रित और तुलसी मानस प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश, मानस भवन, भोपाल से प्रकाशित।
प्रधान संपादक : प्रभुदयाल मिश्र एवं संपादक : देवेन्द्र कुमार रावत